छोटा भूगोल हस्तामलक

OR,

ABRIDGMENT OF BAUGOL HASTAMALK

(VOL.I.)

श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिमोत्तरदेशाधिकारी श्रीयुत नव्वाब लेफ़्टिनेंट गवर्नर बहादुर की आज्ञानुसार राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द ने बनाया

BY

RÁJÁ ŚIVAPRASÁD, C.S.I.,

FELLOW OF THE UNIVERSITY OF CALCUTTA, AND LATE INSPECTOR, 3RD CIRCLE, D. P. I., N. W. P.

ग्रन्थ लाघव के लिये संकेत

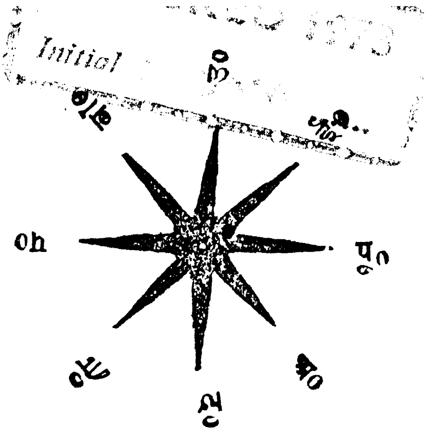
उ०	उत्तर	मी० मु०	मील मुरब्बा
द०	दक्षिण	बा० क०	बायां कनारा
पू०	पूर्व	द० क०	दहना कनारा
प०	पश्चिम	रु०	रुपया
वा०	वायुकोन	उ० अ०	उत्तर अक्षांश
ई०	ईशानकोन	पू० दे०	पूर्व देशान्तर
अ०	अग्नि कोन	स० मु०	सदर मुक़ाम
नै०	नैर्ऋतकोन	°	अंश
मी०	मील	′	कला

लखनऊ—मुंशी नवलकिशोर के छापेख़ाने में छपा

अप्रिल सन् १८८८ ई० ॥

1st 1500 copies,
Price, per copy, 3 annas.

पहली बार १५०० पुस्तकें
मोल फ़ी पुस्तक ≡) आने



छोटाभूगोलहस्तामलक

जानना चाहिये कि यह भूगोल जो नारंगी सा गोल है और बिना किसी आधार के अधर में सूर्य्य के गिर्द घूमता है दो तिहाई से अधिक पानी से ढंपा हुआ है। पहाड़ जो देखने में बहुत बड़े मालूम पड़ते हैं जब पृथ्वी के डील डौल पर ध्यान करो कि जिसका घेरा २५०२० मील का है तो ऐसे जान पड़ेंगे जैसे नारंगी के छिलके पर कहीं कहीं रवे अथवा दाने२ से रहा करते हैं। यद्यपि हिन्दुओं के ज्योतिष शास्त्र में भी पृथ्वी को गोल ही बतलाया है, पर अब अंगरेज़ी जहाज़ों के समुद्र में चारों तरफ़ घूम आने से इस बात में कुछ भी संदेह बाक़ी न रहा, क्योंकि जब वह आदमी जो बराबर सीधा एक ही दिशा को मुंह किये चला जाता है, चलते चलते कुछ दिनों पीछे बिना दहने बाएं मुड़े फिर उसी स्थान पर आजाता है

जहां से चला था, तो इस हालत में पृथ्वी का आकार सिवाय गोल के और किसी प्रकार का भी नहीं ठहर सकता, और सच है, जो पृथ्वी गोल न होती तो हिमालय पहाड़ के ऊंचेऊंचे शृङ्ग हिन्दुस्तान के सारे शहरों से क्यों न दिखलाई देते, अथवा उन शृङ्गों पर से दुर्बीन लगाकर, कि जिस से लाखों कोस के तारों की सूरतें दिखलाई देती हैं, शरद ऋतु के निर्म्मल आकाश में सारा हिन्दुस्तान क्यों न देख लेते; बरन समुद्र के तट पर खड़े होकर जोकिसी आते हुए जहाज़को देखनेलगो तो पहले उसका मस्तूल अर्थात् ऊर्ध्वभाग और फिर पीछे से जब जहाज़ कुछ समीप आ जायगा तो पतवार अथवा अधोभाग दिखलाई देवेगा, क्योंकि जब तक जहाज़ समीप नहीं आता पृथ्वी की गुलाई के कारण उसका अधोभाग जल की ओट में छिपा रहता है। यह पानी जिस से दो तिहाई पृथ्वी ढँकी हुई है, समुद्र अथवा सागर कहलाता है। यद्यपि समुद्र इस भूमण्डल पर एक ही है, पर जैसे हवेलियों का ठिकाना मिलने के लिये शहर को महल्लों में बांट देते हैं वैसे ही समुद्र में द्वीप और जहाज़ों का सहज से पता लगजाने के वास्ते उसके पांच हिस्से करके पांच नाम रख दिये हैं। पहले हिस्से को, जो अमेरिका में महाद्वीप से फ़रंगिस्तान और अफ़रीका के मुल्क तक फैला हुआ है अटलांटिक समुद्र कहते हैं, दूसरे हिस्से को जो अमेरिका महाद्वीप और एशिया के मुल्क के बीच में है, पासिफ़िक समुद्र बोलते हैं। तीसरा हिस्सा, जिसकी हद्द अफ़रीका के मुल्क से लेकर हिन्दुस्तान और आस्ट्रेलिया के टापू तक है, उसका नाम हिन्द का समुद्र रक्खा गया है, और चौथा और पांचवां हिस्सा जो उत्तर और दक्षिण ध्रुव के गिर्द है, उत्तर समुद्र और

दक्षिण समुद्र कहलाता है। इन पिछले दो समुद्रों का जल शीत की अधिकाई से जमकर सदा यख़् अर्थात् पाला बना रहता है; जो ध्रुव के समीप है वह तो कभी नहीं गलता, और बाक़ी गर्मियों के मौसिम में जहां कहीं गलता है तो यख़् के टुकड़े पहाड़ों की तरह वहां जलमें तिरने लगते हैं। इन पांचों समुद्रों के जो छोटे छोटे टुकड़े दूर तक थल के भीतर आगये हैं, वे खाड़ी कहलाते हैं और खाड़ियों के नाम अकसर उन शहर अथवा मुल्कोंके नाम पर बोले जाते हैं जो उनके समीप अथवा कनारे पर होते हैं। बन्दर वह स्थान है जहां जहाज़ समुद्र की कोल में आकर लंगर डालते हैं। इस भूगोल का एक तिहाई जो जल से बाहर थल अर्थात् सूखा है कुछ एकही ठौर नहीं बरन कई जगह टुकड़ा टुकड़ा समुद्र के बीच बीच में प्रकट होरहा है। इन ज़मीन के टुकड़ों में जो टुकड़े बहुत बड़ेहैं, और इसी वास्ते वे महाद्वीप कहलाते हैं, बाक़ी छोटे छोटे टुकड़े द्वीप अथवा टापू कहे जाते हैं। ज़मीन के हिस्से जो दूर तक समुद्र में निकल गये हैं, अर्थात् तीन तरफ़ उनके पानीहै, और एक तरफ़ महाद्वीप से मिले हुए हैं, उनको प्रायद्वीप बोलते हैं, और उसी प्रायद्वीप का सिरा, अर्थात् अग्रभाग, अन्तरीप है, और पिछला भाग जहां वह महाद्वीपसे मिलता है, जो तंग और छोटा हो तो डमरू-मध्य कहा जायगा, क्योंकि जैसे डमरू का मध्य उसके एक हिस्से को दूसरे से जोड़ता है, उसी तरह यह भी ज़मीन के एक हिस्से को दूसरे से मिलाता है। यह भी जानना अवश्य है कि ज़मीन, अर्थात् थल, सभी जगह बराबर एकसी बट्टा ढाल मैदान नहीं है, किसी जगह बहुत ऊंची होगई है, ऊंची

ज़मीन का नाम पहाड़ है, और जिन पहाड़ों के अन्दरसे आग निकलती है वे ज्वालामुखी कहलाते हैं। पहाड़ों के झरने और मेह का पानी जो इकट्ठा होकर मैदान में बहता हुआ समुद्र को जाताहै, उसे नदी कहते हैं; पर जो नदी बहुत बड़ी होती है वह दर्या भी कही जाती है, और जो बहुतही छोटी होती है वह नाला कहलातीहै, और जो नदीसे काटकर किसी दूसरी जगह पानी ले जावें, तो उसे नहर बोलते हैं। जब कभी इस मेह के पानी को बहने को राह नहीं मिलती और किसी नीची ज़मीन में इकट्ठा हो जाताहै, तो वही ताल और झील है। जिस तरह पर कोई माली या ज़मींदार किसी बड़े बाग या खेत को जुदी २ क़िस्म के फूल वा अन्न बोने के लिये तख़्ते चमन और क्यारियों में हिस्से करता है, उसी तरह यह पृथ्वी भी जुदा जुदा क़ौमके आदमी और जुदा जुदा बादशाह राजे और कारदारों की बादशाहत राज और कार्दारी के कारण जुदा जुदा हिस्सों में बंटी हुई है। मुल्क अथवा देश छोटे और बड़े सब हिस्सों को कह सक्ते हैं; पर विलायत उसी बड़े हिस्से को कहेंगे जिसमें निराली क़ौम बस्ती हो, और जहांका चाल चलन और व्यवहार जुदाही बरता जाता हो। विलायतें बमूजिब अपनी लंबान चौड़ान के सूबोंमें और सूबे ज़िलों में और ज़िले परगनों में बंटे रहते हैं, और फिर हर एक परगने में कई एक मौज़े अर्थात् गांव बसे होते हैं। जो बस्ती बहुत बड़ी होती है, अर्थात् जिसमें हज़ारों आदमी बस्ते हैं और पक्के संगीन बड़े बड़े मकान बने होते हैं, उसको शहर और नगर कहते हैं। शहर से छोटा और गांव से बड़ा क़सबा कहलाता है। जानकार आदमियों ने

भूगोल विद्यार्थियों के देखने के वास्ते ज़मीन का नमूना और उसकी तसवीर बनादी है । भूगोल के नमूने को भी भूगोल कहते हैं, और ठीक भूगोल के डौल पर गोल बनाते हैं, और तसवीर वह है, कि जिस को नक़शा कहते हैं, ज़मीन नारंगी की तरह गोल है और समुद्र और टापू उसकी चारों अलंग पड़े हैं, और तसवीर में हर एक चीज़की एकही अलंग दिखलाई देती है, दोनों अलंग कदापि दिखलाई नहीं दे सकती, इस वास्ते भूगोल के नक़शे में उसकी दोनों अलँगों की दो तसवीरें लिखी जाती हैं। जैसे आदमी के चिहरे की कोई तसवीर खैंचकर उसकी सब अलँगों को दिखलाना चाहे, तो अवश्य उसकी दो तसवीरें लिखनीपड़ेंगी एक में तो आंख, नाक, कान और मुंह इत्यादि नज़र पड़ेंगे और दूसरी में चिहरे की पिछाड़ी अर्थात् गुद्दी और सिर के बाल दृष्टि में आवेंगे; लेकिन भूगोल की तसवीर देखकर कोई ऐसा न समझे कि वह चक्की के पाटों की तरह चिपटा है वह तसवीर में चिपटा इस वास्ते मालूम होता है, कि तसवीर में किसी चीज़ की भी उंचाई प्रत्यक्ष प्रगट नहीं हो सकती यह भी बख़ूबी समझ लेना चाहिये, कि सहज में गांव और शहर इत्यादि का पता लगने के वास्ते और इस बात के लिये कि जो किसी बिलायत का जुदा नक़शा खिंचा हो तो तुरन्त यह जानसकें कि वह बिलायत, भूमंडल के किसखंड में, कौन कौनसी बिलायत से किस २ तरफ़ को पड़ती है, भूगोल के नक़शे में ठीक बीचोंबीच पू० से प० को एक लकीर जिसका नाम विषुवत् रेखा है, खींचकर भूगोल को बराबर दो हिस्सों में अर्थात् उ० और द० बांट दिया है, और उस

विषुवत् रेखा को ३६० अंशोंमें, जिसे फ़ारसी में दर्जा कहते हैं, भाग करके प्रत्येक अंश से एक एक लकीर उ० और द० की तरफ़ खींच दी है, और फिर उन लकीरों को ३६० अंशों में भाग देकर हर एक अंश में पू० से प० को लकीरें खींच दी हैं * निदान इन लकीरों से तमाम भूगोल के नक़शे पर इस तरह के ख़ाने बन गये हैं कि जैसे चौपड़ और शतरंज में घरबने रहते हैं, और इन्हीं घरों अर्थात् लकीरों के अंशों की गिनती से भूगोल के सब स्थानों का पता लग जाता है, और एक जगह का दूसरी जगह से फ़ासिला भी मालूम होजाता है † जो लकीरें पू० से प० को खिंची हैं, उन्हें अक्षांस और उ० से द० को उन्हें देशान्तर कहते हैं। अक्षांस की गिनती विषुवत् रेखा से करते हैं, और देशान्तर उस लकीर से गिनते हैं, जो नक़शे में इंगलिस्तान के दर्मियान ग्रीनिच नगर पर से खींची गई है। जैसे चौपड़ और शतरंज में घर की गिनती बोलने से उस स्थान का अनुभव होता है, उसी तरह अक्षांस और देशांतर के अंश की गिनती

---

* छोटे नक़शों में जगह न मिलने के कारण अक्सर प्रत्येक अंश से एक एक लकीर न खींचकर दस दस अंशोंके बाद खींच देते हैं॥

† जब पृथ्वी का घेरा २४०२० का ठहरा और ३६० दर्जों में बांटा गया तो अवश्य एक एक दर्जा अर्थात् अंश ६९॥ मील का पड़ेगा जबकिसी जगह का किसी जगह से फ़ासला जानना मंज़ूर हो देख लो कि उन दोनों में कितने दर्जों का तफ़ावत है और फिर ६९॥ से गुनके मील निकाल लो॥

कहने से नक़शे में उस जगह के गांव शहर इत्यादि का ज्ञान हो जाता है। गिनती अंशों को नक़शों में उन्हीं अंशों पर लिखी रहती है, और अंश के साठवें हिस्से को कला, और कला के साठवें हिस्से को बिकला कहते हैं। ध्रुव भूगोल में विषुवत् रेखा से उ० और द० उन दो स्थानों का नाम है, जहां देशांतर की सारी लकीरें इकट्ठी होकर आपस में मिल जाती हैं। भूगोल के नक़शे में सिवाय ऊपर लिखी हुई लकीरों के और भी चार लकीर के निशान बिन्दी बिन्दी देकर पू० से प० को बने रहते हैं, प्रयोजन उस से इस बात का बतलाना है, कि इन बिन्दियों के पहले दोनों लकीरें जो विषुवत् रेखा से २३॥ अंश के तफ़ावत पर उ० और द० की तरफ़ खिंची हैं उनके दर्मियान के मुल्क में सदा सूर्य्य के साम्हने रहने से गर्मी बहुत होती है, इसी वास्ते वह मुल्क गर्मसेर अथवा ग्रीष्म प्रधानक कहलाता है, और बाक़ी बिन्दी की दो लकीरें, जो दोनों ध्रुवों से २३॥ के फ़ासिले पर दोनों तरफ़ खिंची हुई हैं, उन के अंदर सर्दसेर मुल्क अथवा शीतप्रधानक देश हैं, क्योंकि उस पर सूर्य्य की किरन सदा तिरछी पड़ती हैं, इन सर्दसेर और गर्मसेर मुल्कों के दर्मियान मोतदिल अथवा अनुष्णाशीत मुल्क बसा है अर्थात् जो न बहुत गर्म है न सर्द। हम अभी ऊपर लिख आये हैं कि जिस तरह मकानों की तसवीर बनती है, उसी तरह बुद्धिमानों ने भूगोल का भी नक़शा रचा है। भूगोल के नक़शों में, उन नक़शों का बिस्तार बहुत बढ़ जाने के भय से, शहर नदी पहाड़ सड़क झील इत्यादि की जगह नीचे लिखे हुए चिन्ह लिख देते हैं, उनका पूरा आकार नहीं बनाते। नक़शे में इन्हीं चिन्हों को देखकर उनका अनुभव

कर लेना चाहिये थल अर्थात् ज़मीन के उन दो बड़े टुकड़ों से, जो महाद्वीप कहलाते हैं, एक का नाम तो अमेरिका है, जिसे बहुधा नई दुनिया और नया महाद्वीप भी बोलते हैं, और दूसरे अथवा पुराने महाद्वीप के तीन खण्ड तीन नाम से पुकारे जाते हैं, । पू० का खण्ड एशिया, प० का यूरप अथवा फ़रंगिस्तान, और द० का अफ़रीका । इन सब में टापुओं समेत अटकल से प्राय: नव्बे करोड़ आदमी बस्ते हैं और उन की भाषा भिन्न २ प्रकार की कुछ न्यूनाधिक दो सहस्र होवेंगी । इन नव्बे करोड़ आदमियों में से प्राय: पच्चीस करोड़ तो ईसाई मज़हब रखते हैं, पैंतीस करोड़ बुध का मत मानते हैं, दस करोड़ मुसल्मान हैं, और दस ही करोड़ के लग भग हिन्दू होवेंगे, बाक़ी दस करोड़ में संसार के और सब मज़हब के आदमी सोच लेने चाहियें ॥

एशिया

सीमा—उ० उत्तर समुद्र, द० हिन्द समुद्र, पू० पासफ़िक समुद्र और प० रेडसी नामक समुद्र की खाड़ी, स्वीज़ का डमरुमध्य, मेडीटरेनियन और ब्लाकसी नामक समुद्र की खाड़ियां, डन और बलगा नदियां, और यूराल पहाड़ । अक्षांश उ० २ से लेकर ७७ तक देशांतर पू० २६ से लेकर प० १७० तक । लम्बान पू० से प० अधिक से अधिक ७५०० मील और चोड़ान उ० से द० को ५००० मील । बिस्तार १७५०००० मी०मु० । आदमी उस में ५४२५०० ००० बस्ते हैं, और आबादी उसकी इस हिसाब से फ़ी मी० मु० ३१ आदमी को पड़ती है भाषा उस में १४३ से अधिक बोली जाती हैं । पृथ्वी के इस भाग में ऐसे सर्द मुल्क से लेकर जहां समुद्र भी जम जाता है, इतने गर्मसेर तक बसे

हैं कि जिनमें आदमी सूर्य्यके तेजसे काले होजाते हैं। एशिया का मुल्क अगली तवारीख़ और इतिहासों में बड़ा प्रसिद्ध है, क्योंकि पहला आदमी जिससे हम सब मनुष्य उत्पन्नहुए पृथ्वी के इसी भागमें पैदा हुआ था, और इसी भागसे सारी बातें बुद्धि बिबेक और सुख की निकलनी शुरू हुई। पहले ही पहल पृथ्वी के इसी भाग में प्रतापी और बलवान् राजा हुए, और सब से पूर्ब इसी भाग में लक्ष्मी और विद्या का पैर आया; सिवाय इसके जैसे नदी पहाड़ जंगल और मैदान पृथ्वी के इस भाग में पड़े हैं, और जैसे फल फूल ओषधि अन्न पशु पक्षी धातु रत्न इत्यादि इसमें पैदा होते हैं ऐसे कदापि दूसरे खंडों में नहीं मिलेंगे। एशिया में नीचे लिखी हुई विलायतें बसी हैं। आदी हिन्दुस्तान उसके पू० ब्रह्मा, उसके द० स्याम, उसके द० मलाका, स्याम के पू० कोचीन, ब्रह्मा के पू० और उ० चीन, उसके उ० एशियाई रूस, चीन के पू० जापान के टापू, हिन्दुस्तान के प० अफ़ग़ानिस्तान, उसके प० ईरान, चीनके प० तूरान, ईरान के प० अरब, उसके उ० एशियाई रूम॥

हिन्दुस्तान॥

एशिया के द० भाग में ८° से ३५° उ० अ० तक और ६७° से ९२° पू० दे० तक चला गया है। संस्कृतवाले इसे भारतवर्ष, और अंगरेज़ इंडिया कहते हैं। सीमा, द० समुद्र० उ० हिमालय पहाड़, प० सिंधु पार सुलैमान पर्वत, और पू० मनीपुर के जंगल पहाड़ोंसे परे ब्रह्मा का मुल्क। लम्बान कश्मीर से कन्याकुमारी अन्तरीप तक, जो सेतबंधरामेश्वर के भी अगाड़ी द० में है, प्राय: १८०० मील, और चौड़ान ब्रह्मा देशकी सीमा

से मुंज अन्तरीप तक, जो करांची बंदर से भी बढ़कर प० में है, और जिसे वहां वाले रास मुअर्री भी कहते हैं, प्राय: १६०० मील । विस्तार कुछ न्यूनाधिक १२००००० मी० मु०, और आदमी अटकल से १४०००००० बस्ते हैं । पड़ता फैलाने से फ़ी मील मु० कुछ ऊपर ११६ आदमी पड़ेंगे । हम अभी ऊपर एशिया की बड़ाई लिख आये हैं, पर जानना चाहिये कि एशिया में भी यह देश सब से अधिक प्रख्यात था और किसी समय में विद्या और धन के कारण सबका शिरोमणि गिना जाता था ॥

पहाड़ इस मुल्क में कम हैं और मैदान बहुत, और उन मैदानों में नदियां इस बहुतायत से बहती हैं, कि सारा मुल्क मानों बाग़ की तरह सिंच रहा है । हिमालय पर्वत, जो इस मुल्क की उ० सीमा है, दुनिया के सब पर्वतों से ऊँचा है । पू० में उस स्थान से जहां ब्रह्मपुत्र, प० में उस स्थान तक, जहां सिंधु नदी, इसे काटकर तिब्बत से हिन्दुस्तान में आती है, इस पहाड़ की लम्बान प्राय: २००० मील, और चौड़ान अनुमान कुछ कम ४०० मील होवेगी । हिमाचल और हिमाद्रि भी उसी का नाम है । हिम संस्कृत में बर्फ़ को कहते हैं । इस पहाड़ के शृङ्ग सदा बारहों महीने बर्फ़ से ढके रहते हैं । सबसे ऊंचा शृङ्ग धवलगिरि जहां से गंडक नदी निकली है, समुद्र के जल से कुछ ऊपर २८००० फ़ुट ऊंचा है । जमनोत्री का पहाड़, जिसके नीचे से जमना निकली है, प्राय: २६००० फ़ुट और पुरगिल पहाड़, जो पित्ती और सतलज नदी के बीच में है, प्राय: २३००० फ़ुट ऊंचा है । नीतिघाटी, जिसे नीति भी कहते हैं, बदरीनाथ से ई० की तरफ़ दौली नदी के कनारे, कुछ ऊपर १६००० फ़ुट समुद्र से बलंद है । कमाऊं, गढ़वाल

वाले इसी घाटी से हिमालय पार होकर तिब्बत और चीनको जाते हैं। हिमालय के पहाड़ों में प्रायः तेरह हज़ार फ़ुटकी ऊँचाई तक तो जंगल भी होता है, और आदमी भी बस्ते और खेतीबारी करते हैं, फिर १३००० फ़ुटसे ऊपर बर्फ़ही बर्फ़रहती है। जो पहाड़ १३००० फ़ुटसे कम और ७०००से अधिक ऊंचे हैं, उन पर केवल जाड़े के दिनों में थोड़ी बहुत बर्फ़ गिर जाती है। जोरार्ड साहिब पुरगिल पहाड़ पर २०००० फ़ुट तक ऊंचे चढ़े थे, इससे अधिक ऊंचे इन पहाड़ों पर किसी आदमी का जाना अब तक सुनने में नहीं आया। हिमालय के सिवाय इस मुल्क में और भी जो सब पहाड़ बर्णन योग्यहैं, उनमें से बिंध्याचल इस देश के मध्य में पड़ा है, खंभात की खाड़ी से नर्मदा नदी के उत्तर २ ज़िले भागलपुर में गंगा के कनारे तक चला आया है, पर ऊँचाई उसकी अनुमान दो अढ़ाई हज़ार फ़ुट से अधिक नहीं। सह्याद्रि बिंध्या के प० सिरे से लेकर समुद्र के तट से निकट हो निकट कुमारी अंतरीप तक चला गया है। पश्चिम घाट भी इसी को कहते हैं, और मलयागिरि इसी के द० भाग का नाम है। सह्याद्रि के साम्हने बंगाले की खाड़ी के निकट कावेरी नदी से बिंध्य के पूर्व सिरे तक पहाड़ों की जो एक छोटी सी श्रेणी गई है उसे पूर्व घाट बोलते हैं। इन पश्चिम और पूर्व घाट के बीच में द० तरफ़ जो पहाड़ उसका नाम नीलगिरिहै। यद्यपि इन पहाड़ों में पानी और जंगल की बहुतायतसे बड़े२ रम्य और मनोहर स्थान हैं, पर शृङ्ग उनके पांच छः हज़ार फ़ुट से अधिक ऊंचे कोई नहीं, केवल एक मूर्चूत्तिवेत नीलगिरि से कुछ ऊपर आठ हज़ार फ़ुट ऊंचा है॥

नदियां जो इन पहाड़ों से निकलती हैं मुख्य उनमें गंगा जमना सरयू गंडक सोन कोसी तिश्रा चम्बल सिंध झेलम चनाव रावी व्यासा सतलज ब्रह्मपुत्र नर्मदा ताप्ती महानदी गोदावरी कृष्णा और कावेरी हैं। गंगा इस देश की प्रधान नदी, जिसे संस्कृत में भागीरथी जाह्नवी इत्यादि बहुतेरे नामों से पुकारते हैं, हिमालय में गंगोत्रीसे निकलकर १५०० मील बहनेके बाद अनेक प्रवाहों से बंगाले की खाड़ी में गिरती है। राजमहलसे कुछ दूर बढ़कर इसकी कई धारा होगईं, पर जो कलकत्ते के नीचे होकर भागीरथी और हुगलीके नाम से सागर के टापू के पास समुद्र से मिलती है, हिन्दू उसी को असली गंगा समझते हैं, और गंगासागर उसके संगम को बड़ा तीर्थ मानते हैं; और जो धारा सब से बड़ी पूर्ब में ब्रह्मपुत्र के साथ मिल कर द० शहबाज़पुर नाम टापूके साम्हने समुद्र में गिरती है, उसे पद्मा, पद्मावती और पद्दा भी कहते हैं, इसका महात्म्य असली गंगा के बराबर नहीं मानते। इस सौ कोसके तफ़ावत में जो इन दोनों धारा के बीच पड़ा है, गंगा की और सब सैकड़ों धारा समुद्र से मिलती हैं। पानी की बहुतायत से इस जगह में बड़ा दलदल और अति सघन जंगल रहता है, उसी का नाम सुन्दरबन है। जमना, जिसका शुद्ध नाम यमुना है, और जिसे संस्कृतमें कालिन्दीनदी इत्यादि नामोंसे भी पुकारते हैं, गंगोत्री से कुछ दूर प० हिमालय में जमनोत्री के पहाड़ से निकलकर कुछ कम ८०० मील बहतीहुई प्रयागके नीचे जिसे इलाहाबाद भी कहते हैं, गंगामें मिल जाती है। इनके संगम को हिंदू त्रिबेनी कहते हैं, और बहुतही बड़ा तीर्थ मानते हैं। सरयू, जिसे शरयू सरजू घर्घरा घाघरा देविका और देवा भी कहते

हैं, और गंडक अथवा गंडकी, और कोसी जिसका शुद्ध नाम कौशिकी है, और तिष्ठा, जिसे संस्कृत में तृष्णा और त्रिस्रोता भी कहते हैं, ये चारों नदी हिमालय से निकलकर पहिली छपरे से कुछ दूर ऊपर, दूसरी पटने के साम्हने, तीसरी भागलपुर से कुछ दूर आगे बढ़कर, और चौथी करतोया को लेती हुई नवाबगंज के पास गंगा से मिलती हैं। गंडक में सालग्राम निकलते हैं, इसलिये उसे सालग्रामी भी कहते हैं। गंडक में तैरना और करतोया में नहाना हिंदुओं के मत बमूजिब मना है, और इसी तरह कर्मनाशाके, जो एक छोटी सी नदी बनारस और बिहार के ज़िलों के बीच बहकर गंगा में गिरती है, पानी छूने के लिये मनाही है। चम्बल,जिसे संस्कृत में चर्मण्वती लिखा है, और सोन अथवा शोण, यह दोनों बिंध्याचल से निकल कर पहली तो इटावे से २४ मील नीचे जमना में गिरती है, और दूसरी शरयू और गंडक के मुहाने के बीच में छपरे के साम्हने द० से आकर गंगा में मिली है। सिंधु नदी जिसे अटक का दर्या और अंगरेज़ लोग इंडस कहते हैं,हिमालय के पार गाह्रू शहर के पास कैलास पर्वत की उ० अलंग से निकली है, और १७०० मीलसे ऊपर बहकर कई धारा हो, कि जिन में सब से बड़ी का पाट मुहाने पर १२ मील से कम नहीं है, हिन्दुस्तान की प० दिशा में समुद्र से मिलती है। झेलम चनाव रावी व्यासा और सतलज ये पांचों नदियां हिमालय से निकलकर सब की सब इकट्ठी पंजनद के नाम से मिट्ठन कोट के नीचे सिंधु में गिरती हैं, और इन्हीं पांच नदियों से सिंचाहुआ देश पंजाब कहलाता है। इनमें से एक सतलज तो हिमालय के उ० भाग में मानसरोवर के पास

रावणहृद से निकली है, और बाक़ी चारों हिमालय की द० ढलंग से निकलती हैं। झेलम, जिसे शास्त्रमें बितस्ता लिखा है, कुछ ऊपर ४०० मील बहकर झंगसे२० मील नीचे चनाबसे मिलजाती है, और रावी भी, जिसका संस्कृत नाम ऐरावती है, कुछ ऊपर ४०० मील बहती हुई मुल्तानसे ४०मील ऊपर इसी चनाब से आमिलती है। व्यासा, जिसे बिपाशा भी कहते हैं, अभयकुण्ड से निकल अनुमान २०० मील बहकर हरीके पतन के पास सतलज से मिलती है, और सतलज, जिसका शुद्ध नाम शतद्रू है, कुछ ऊपर ८०० मी० बहकर बहावलपुरसे ४० मी० नीचे चनाब से मिल,पंचनद के नामसे अनुमान ६० मी० बहकर, मिट्ठन कोट के नीचे, जैसा कि अभी ऊपर लिख आये हैं सिंधु में जा गिरती है। चनाब, जिसे संस्कृतमें चन्द्रभागा कहते हैं, हिमालय में अपने निकास से मिट्ठनकोट तक कुछ ऊपर ६०० मी० लंबी है। ब्रह्मपुत्र जिसे तिब्बत वाले साम्पू कहते हैं, मानसरोवर के पास हिमालय की उ० ढलंग से निकलकर, कुछ ऊपर १६०० मील बहता हुआ समुद्र के पास आकर गंगा में मिल जाता है। नर्मदा शोण के उद्गमस्थान से पासही अमरकंटक से निकलकर, ७०० मील बहती हुई भड़ोंच के पास खंभात की खाड़ी में जागिरती है, और उसके मुहाने से कुछ दूर द० सूरत से २० मील नीचे तापी भी जो बेतूल के पास पहाड़ से निकली है, ४५० मील बहकर समुद्र से मिल गई है। महानदी नागपुर की अमलदारी से निकलकर ४०० मी० बहती हुई कटक के पास कई धारा होकर समुद्र में गिरी है। गोदावरी पश्चिमघाटमें त्रिम्बक से निकलकर बरदा और बानगंगा को, जो दोनों नदियां गोंडवाने के

इलाक़े से निकली है,लेती हुई ८०० मील बहकर राज महेंद्री के नीचे समुद्र से मिली है। कृष्णा भी उन्हीं पहाड़ों में सितारे के नज़दीक महाबलेश्वर से निकलकर मालपर्ब, गतपर्ब,भीमा, जिसे संस्कृत में भीमरथी लिखा है,तुंगभद्रा इत्यादि नदियों को जो उन्हीं पश्चिम घाट के पहाड़ों से निकली हैं लेती हुई ७०० मी० बहके मछली बंदर के पास समुद्र से मिल गई है, और कावेरी नीलिगिरि में उतकमंद अथवा उटकमंड से निकल कर कुछ ऊपर ४०० मी० बहती हुई तिरुचिन्नापल्ली से थोड़ी दूर आगे समुद्र में खपगई है। निदान मुख्य नदियां तो यह हैं जिनका बर्णन हुआ, और बाक़ी छोटी छोटी तो इतनी हैं, कि जिनकी गिनती बतलाना भी कठिन है,पर उन में से बहुत इन्हीं ऊपर लिखी हुई नदियों में मिल गई हैं। हिन्दुस्तान की नदियां बरसात में सब बढ़ती हैं, पर जो हिमालय के बर्फ़ी पहाड़ से निकलीहैं, वे बर्फ़ गलने के सबब गर्मी में भी कुछ थोड़ी बहुत बढ़ जाती हैं। नक़्शे में नदियों का बहाव देखने से देश का ऊंचा नीचा होना भी बख़ूबी मालूम हो जाता है। जहां से नदियां निकलती हैं, वहां अवश्य पहाड़ अथवा ऊंची धरती रहती है, और जिधर को वे बहती हैं वह उस्से नीची और ढाल होती है॥

नहर बड़ी इस मुल्क में दोही हैं, एक तो जमना की जो पहाड़से काटकर दिल्लीमें लायेहैं, और जिसका एक सोता पश्चिम में हरियाने तक पहुँचकर रेगिस्तान में खप जाताहै, और दूसरी गंगा की जो हरद्वार से काटकर कान्हपुर तक दुआबे में लाये हैं॥

झील हिन्दुस्तान में बड़ी कोई नहीं और छोटी छोटी भी बहुत कम हैं। चिल्का कटक के पास, ३४ मी० लम्बी ८ मी० चौड़ी है, पानी खारा और उस्से नमक तैयार होताहै। पल्लाकाट अथवा पलियाकट, जिसे कोई प्रलयघाट भी कहता है, इतनी ही बड़ी, कर्नाटक अथवा कर्णाटक देश में है कोलेरु कृष्णा और गोदावरी के बीच में ४६ मी० लंबी १४मी० चौड़ी है। सांभर जयपुर और जोधपुर की अमल्दारी के बीच में, २० मी० लंबी और २ मी० चौड़ी है, सांभर नमक उसी में पैदा होता है। ऊलर, कश्मीर के इलाक़े में १६मी० लंबी और ८ मी० चौड़ी और गहरी इतनी कि अब तक किसी ने उसकी थाह नहीं पाई, वितस्ता एक तरफ़से उसका पानी लेती हुई बही है॥

हिन्दुस्तान के खण्ड तीन गिने जाते हैं जो हिमालय के पहाड़ों में हैं वह उत्तराखण्ड, जो नर्मदा और महानदी से दक्षिण है वह दक्षिणात्य, अर्थात् दक्षिण देश अथवा दक्खिन, और इन दोनों के बीच आर्यावर्त है उसी को पुण्यभूमि कहते हैं। हिन्दुस्तान का दक्षिण भाग अन्तरीप है॥

मुसल्मान बादशाहों ने अपनी बादशाहत यहां २२ सूबों में बांटी थी परन्तु उन में से काबुल क़ंदहार और ग़ज़नी तो इस विलायत से बाहर हैं, और दक्षिण देश के कितने ही ज़िले उनके दख़ल में न रहने के कारण उन सूबे में गिने ही नहीं गये थे, सिवाय इसके उन सूबों की हद्दें अब ऐसी बदल गई हैं, कि कुछ तो एक के पास हैं, और कुछ दूसरे के हाथ चले गये, इसलिये उन सूबों का ख़याल छोड़कर और इस मुल्क को अंगरेज़ी और हिन्दुस्तानी अमल्दारी में

भाग देकर उनके ज़िलों का उस क्रम से बयान करते हैं जो अब बर्ते जाते हैं॥

अंगरेज़ी अमल्दारी में तीन हाते हैं, बंगाल हाता मंदराज हाता और बम्बई हाता। बंगाल हाते में कर्मनाशा नदी तक के ज़िले तो बंगाले के लेफ्टिनेंट गवर्नर के तहत में हैं और फिर जमना तक पश्चिमोत्तर देशाधिपति लेफ्टिनेंट गवर्नर के ताबे, जमना के पार उ० में लाहौर वाले लेफ्टिनेंट गवर्नर का इख़तियार है। और गंगा पार अवध के इलाक़े में वहां के चीफ़ कमिश्नर का इसी तरह बीच में नागपुर का चीफ़ कमिश्नर है और उसके दक्षिण बराड़ का॥

पहले उन ज़िलों का बर्णन होताहै जो पश्चिमोत्तर देशाधिपति लेफ्टिनेंट गवर्नर के तहत में हैं।—१—इलाहाबाद, सद्र मुक़ाम इलाहाबाद जिसका असली नाम प्रयाग है २५° २६′ उ० अ० ८१°। ५०′ पू० दे० में गंगा और जमना के बीच जहां उन दोनों का संगम हुआ हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है। यह बादशाही ज़माने में इसी नाम के सूबे की राजधानी था अब पश्चिमोत्तर देशाधिपति लेफ्टिनेंट गवर्नर बहादुर की राजधानी है। मकर की संक्रान्त का बड़ा भारी मेला होता है। क़िला बहुत मज़बूत है।—२—मिर्ज़ापुर इलाहाबाद के पू०, स० मु० मिर्ज़ापुर बड़े बेवपार की जगह गंगा के द० कि० बसा है। ६ मील के तफ़ावत पर विंध्यवासिनी देवी का मन्दिर है और २६ मील पू० गंगा के तट एक छोटे से पहाड़ पर चनार का, जिसका शुद्ध नाम चरणाद्रि है, मज़बूत क़िला बना है।—३—बनारस मिर्ज़ापुर के पू० स० मु० बनारस, जिसे मुसल्मान मुहम्मदाबाद और हिन्दू काशी और वाराणसी भी

कहते हैं, ऐन गंगा के बा० क०. बसा है। हिंदुओं का बड़ा तीर्थ स्थान है, इस जगह मरना बहुत उत्तम समझते हैं, शहर बहुत आबाद है, धन, रूप, और संस्कृत विद्या का मानों घर है।—४—जौनपुर बनारस के उ०, स० मु० जौनपुर गोमती के बा० क० है, पुल पक्का बहुत मज़बूत और उमदा बना है।—५—आज़मगढ़, जौनपुर के ई० स० मु० आज़मगढ़ टोंस नदी के बा० क० है।—६—ग़ाज़ीपुर आज़मगढ़ के अ०, स०।मु० ग़ाज़ीपुर गंगाके बा० क० है।—७—गोरखपुर आज़मगढ़ के उ०,उ० तरफ़ तराई का जंगल है,स० मु० गोरखपुर रावती नदी के बा० क० बसा है। ऊपर लिखे हुये छओं* ज़िले बनारस की कमिश्नरी में गिने जाते हैं।—८—बांदा इलाहाबाद के प०, स० मु० बांदा, क़िला पुराना कालिंजर का वहांसे ४८मील द०है। चित्रकूटका पहाड़ कामतानाथ जहांभरत रामचन्द्र के मनाने को आये थे ३६ मील अ०है।—६—फ़तहपुर, इलाहाबाद के बा० स० मु० फ़तहपुर। ऊपर लिखे हुए तीनों ज़िले इलाहाबाद की कमिश्नरी में हैं।—१०—कान्हपुर, फ़तहपुर के बा०,स० मु० कान्हपुर गंगाके द० क० बड़ी छावनी, की जगह है। ६ मील उ० प० झुकता हुआ गंगाके द०क० बिठूर हिंदुओं का तीर्थ है।—११—इटावा, कान्हपुर के प०, स० मु० इटावा जमना के बा० क० है।—१२—फ़र्रुख़ाबाद, इटावे के ई०, स० मु० फ़र्रुख़ाबाद गंगा से ३ मील हटकर द० क० बसा है।• छावनी और क़िला फ़तहगढ़ का ऐन गंगा के कनारे है

* जौनपुर इलाहाबाद की कमिश्नरी में चला गया और पश्चिम का आधा हिस्सा गोरखपुर का बस्ती के नाम से जुदा एक ज़िला बन गया॥

क़न्नौज का पुराना शहर जिसे संस्कृत में कान्यकुब्ज कहते हैं फ़र्रुख़ाबाद से प्रायः ४० मील अ० गंगा के इसी कनारे ऊजड़ा सा पड़ा है।—१३—मैनपुरी,इटावे के उ०, स० मु० मैनपुरी।—१४—आगरा, मैनपुरी के प० बादशाही वक़्त में उसके आस पास के ज़िले उसी नाम के सूबे में दाखिल थे। अकबर बादशाह का यह दारुस्सल्तनत था इसी वास्ते अब तक अकबराबाद पुकारा जाता है। स० मु० आगरा जमनाके द० क० बसा है शाहजहां बादशाह की बेगम मुमताज़ महल का मक़बरा जिसे लोग ताजगंज अथवा ताजबीबी का रौज़ा भी कहते हैं,इस शहर में निहायत उमदा बना है, दुनियामें इस साथ की दूसरी इमारत नहीं है। क़िला, और सिकंदरा जहां अकबर की क़बर है, और जमना पार एतिमादुद्दौला का मक़बरा भी देखने लाइक़ जगह है।—१५—मथुरा,आगरे के बा०,शास्त्र में इसी ज़िले का नाम सूरसेन लिखाहै, स० मु० मथुरा जमना के द० क० कृष्ण का जन्म स्थान है। ९ मील उ० जमनाके उसी कनारे वृन्दाबन श्रीकृष्णके रास बिलास की जगह है। ऊपर लिखेहुए पांचों ज़िले आगरे की कमिश्नरी में गिने जाते हैं।—१६—बदाऊं फ़र्रुख़ाबाद के बा० गंगापार। स० मु० बदाऊं।—१७—शाहजहांपुर, बदाऊं के पू० स० मु० शाहजहांपुर गर्रा नदी के बा० क० है। —१८—बरेली शाहजहांपुर के उ०, स० मु० बरेलीसे जुआ और संकरा नदियों के संगम पर है। बरेली से तीस मील ई० पीलीभीत है।—१९—मुरादाबाद, बरेली के बा० उ० भाग में जंगल और पहाड़ है। स० मु० मुरादाबाद रामगंगा के द० क० बसा है। वहां से मंज़िल एक पर द० नै० को झुकता संभल है। —२०—बिजनौर,मुरादाबाद के उ० स० मु० बिजनौर ये ऊपर

लिखे हुए पांचों ज़िले रुहेलखंड की कमिश्नरी में गिने जातेहैं। —२१—अलीगढ़, मुरादाबाद के नै० स० मु० कोयल। वहां से २ मील पर अलीगढ़ का क़िला है। —२२—बलंदशहर, अलीगढ़के ई०, स० मु० बलंदशहर काली नदी के द० क०।—२३—मेरठ बलंदशहर के उ०, स० मु० मेरठ बड़ी छावनी की जगह है। २४मी० पर ई० की तरफ़ गंगा के द० तटसे निकट जहां किसी समय में हस्तिनापुर बस्ता था अब केवल एक मंदिर दिखलाई देता है, और बाक़ी हर तरफ़ दीमकों की बांबियां हैं। मेरठ से मंज़िल एक पर बा० सरधना बसा है।—२४—मुज़फ़्फ़रनगर मेरठ के उ०, स० मु० मुज़फ़्फ़रनगर।—२५—सहारनपुर, मुज़फ़्फ़रनगर के उ० स० मु० सहारनपुर जमना की नहर उसके बीचमेंगई है वहां से पू० अ० को झुकता गंगा की नहर पर रुरकी देखने लायक जगह है। ये पांचों ज़िले मेरठ की कमिश्नरी में हैं। —२६—देहरादून, सहारनपुर के उ० पहाड़ों के अन्दर साल के जंगल हैं। लंधौर और मंसूरी समुद्र से न्यूनाधिक ६००० फ़ुट ऊंचे साहिब लोगों के हवा खानेकी जगह इसी ज़िले में है, देहरा स० मु० है।—२७—कमाऊं गढ़वाल सहारनपुर से ई० को हिमालय के पहाड़ों में चीन की हद्द तक चला गया है। यह एक बेआईनी कमिश्नरी है। कमाऊं का असिस्टंट स० मु० अलमोरे में रहता है, और गढ़वाल का असिस्टंट अलमोरे से १०४ मील व अलखनंदा के बा० क० श्रीनगर के पास पावरी में रहता है। अलमोरे से ८५मील पू० अ०को झुकती नयपाल की सर्हदपर लोहूघाटकी छावनी है। हिंदुओंका बड़ा तीर्थ बदरीनाथ अलमोरेसे ८०मील उ० ज़रा बा०को झुकता विष्णुगंगा के द० क० समुद्र से १०२०० फ़ुट ऊंचा है बदरीनाथ से सीधा

२५ मील प० लेकिन सड़क की राह प्राय: १०० मील केदारनाथ का मन्दिर है, अलमोरे से २२ मील ने० द० का झुकता ६५०० फुट समुद्र से ऊंचा नैनीताल साहिब लोगों के हवा खाने की जगह है।—२८—अजमेर रजपूताने के बीच अर्वली पहाड़ के पू० जयपुर जोधपुर किशनगढ़ और उदयपुर की अमल्-दारियों से घिरा हुआ। यह भी एक बेआईनी कमिश्नरी है* बादशाही ज़माने में इसके आस पास के सब इलाक़े इसी नाम के सूबे में गिने जाते थे। स० मु० अजमेर एक पहाड़ी की जड़ में बसा है वहां से १४ मील पर नसीराबाद की छावनी है। दूसरी तरफ़ ६ मील के फ़ासिले पर पुष्कर हिंदुओं का बड़ा तीर्थ है।—२९—सागर नर्मदा, अथवा जब्बलपुर की बेआईनी कमिश्नरी, † नैर्ऋत कोन की सीमा और संभलपुर की अजंटी से नर्मदा नदी के दोनों तरफ़ भूपाल और सेंधिया की अमल्दारी तक चली आई है। बिंध्यके टतस्थ होनेके कारण जंगल पहाड़ों से भरी है। स० मु० जब्बलपुर नर्मदा से कुछ दूर हटकर द० क० है साहिब कमिश्नर के नीचे कई डिपटी कमिश्नर मुक़र्रर हैं। आईनी ज़िले के मजिस्ट्रेट कलेक्टरों की तरह अपने अपने हिस्से के ईलाकों का इन्तिज़ाम करते हैं। एक सागर में जब्बलपुर के वा० १०० मील पर रहते हैं। दूसरे सिउनी में जब्बलपुर के द० ने० का झुकता ७०० मील पर तीसरे बेतूल में जब्बलपुर के ने० ९० मील पर। चौथे नरसिंहपुर में जब्बलपुर के प० ने० का झुकता ७० मील पर

* अब यह पश्चिमोत्तर देशाधिपतिके तहत से निकल कर अलग चीफ़ कमिश्नरी होगई॥

† अब यह नागपुर की चीफ़ कमिश्नरी में शामिल है॥

पांचवें होशंगाबाद में जब्बलपुर के प० नै० को जरा झुकता १५० मील पर नर्मदा के बा० क०। छठे मंडले में जब्बलपुर के द० ५६ मील पर। सातवें डमोह में जब्बलपुर के बा० उ० को झुकता ६० मील पर —१०— झांसी का वे आठेनां कमिश्नरी कान्हपुर के प० जमना पार। इसमें चार ज़िले हैं पहले का स० मु० हमीरपुर * बेत्वा के बा०क० जहां वह जमना से मिली है। दूसरेका जालौन हमीरपुर के बा० † तीसरे का झांसी जालौन के नै० और चौथेका चंदेरी ‡ झांसीके द०नै०को झुकता॥

बंगाले के लेफ्टिनेंट गवर्नर के तहत में जो ज़िलेहैं उन में -१-चौबीस परगना, भागीरथी के प० और सुन्दरबन के उ०, स० मु० कलकत्ता २२°२३ʹ उ० अ० और ८८°२८ʹ प० दे० में, समुद्र से ५० फुट ऊंचा, और प्रायः १०० मील दूर ६मील लंबा भागीरथी के, जिसे वहां दर्याय हुगली कहते हैं, बा० क०बसा है। अब यही हिंदुस्तान की राजधानी है। —२— हबड़ा, चौबीस परगने के प० स० मु० हबड़ा कलकत्ते के ठीक साम्हने गंगा पार बसा है।—३—बारासत, चौबीस परगने के उ०, स० मु० बारासत। -४-नदिया, बारासतके उ०, स० मु० किशननगर। शहर नदिया अथवा नवद्वीप गंगा के कनारे, जहां उसकी दोनों धारा जलंघी और भागीरथी का संगम हुआ है, बर्दवान के ज़िले में है। इसी ज़िले में वा० की तरफ़ भागीरथी के कनारे मुर्शिदाबाद के द० ३० मी० पलासी का गांवहै,

* यह ज़िला अब इलाहाबाद की कमिश्नरीमें शामिल होगया है॥

† झांसी का शहर और क़िला संधियाको मिलगया है॥

‡ अब यह ललितपुर का ज़िला कहलाता है॥

जहां लार्ड क्लाइव ने सन् १७५७ ई० में सिराजुद्दौला को शिकस्त दी थी।—५—जसर, नदिया के पू०। सुन्दरबन इस ज़िले के द० भाग में पड़ा है। स० मु० जसर अथवा मुरली।—६—बाक़रगंज, जसर के पू० स० मु० बेरीसाल गंगा के एक टापू में बसा है।—७—नाअकोली, बाक़रगंज़ के पू० स० मु० बलुआ मेघना के बा० क० है।—८—फ़रीदपुर अथवा ढाका जलालपुर बाक़रगंज के उ० स० मु० फ़रीदपुर। वहांसे ५मीलपर पद्मा, बहती है।—६—ढाका ढाका जलालपुर,के पू० स० मु० ढाका, जिसे जहांगीर नगर भी कहते हैं। बुढ़ी गंगा के ब० क० किसी ज़माने में सूबे बंगाले की राजधानी था।—१०—त्रिपुरा ढाका और इस ज़िले के बीचमें ब्रह्मपुत्र का दर्या,जिसे वहां मेघना के नाम से पुकारते हैं, बहता है इस ज़िलेका नाम पुराने काग़ज़ों में रोशना बाद भी लिखाहै। यह पू० दिशामें हिन्दुस्तान का सबसे परला ज़िलाहै इससे आगे जंगल पहाड़हैं कि जिन से परे फिर बर्ह्मा का मुल्क बसता है। स० मु०कोमेला पहाड़ के पास गोमती नदी के बा० क० है।—११—चित्रग्राम अथवा चटगांव, जिसे अंगरेज़ चिटागांग कहते हैं त्रिपुरा के अ० नाफ़ नदी तक चलागया है। यह भी ज़िला हिन्दुस्तान की हद्द पर है। हाथी जंगली त्रिपुरा और चटगांव दोनों में बहुत हैं। चटगांव अथवा इसलामा बाद, कर्नफूली नदीकेद० क० स० मु० है,उससे २० मील उ० हिंदुओंकातीर्थ सीताकुंड है, जल उसका सदा गर्म और जलती हुई बत्ती पास लेजाओ तो उसकी बाफ़ बारूत सी भभक जाती है उसी थाने के इलाक़े में बलेवा कुंड के पानी पर ज्वालामुखी की तरह सदा आग बला करती है।—१२— सिलहट जिसका

शुद्ध नाम श्रीहट्ट है, त्रिपुरा के उ० । शास्त्र में जो मत्स्य देश लिखाहै वह उसीके आस पासहै स० मु० सिलहटसे २० मील ई० उ० को भुकता जयंतापुर पहले एक राजा के दखल में था पर वह राजा अपने देवता को आदमियों का बल चढ़ाता था इसी इल्लत में ज़ब्त होगया ।—१३—कचार अथवा हेरम्ब सिलहट के पू० तीन तरफ़ पहाड़ों से घिरा और दलदलझील और जंगल से भरा, स० मु० सिलचार बारक नदीके बा० क० है ।—१४—मैमनसिंह सिलहट के प० स० मु० सोबारा अथवा नसीराबाद ब्रह्मपुत्र के द० क० ।—१५—पबना जसर के उ० स० मु० पबना । — १६ — राजशाही, पबना के बा० स० मु० बोलिया गंगा के बा० क० ।—१७—बगुड़ा राजशाही के ई० स० मु० बगुड़ा ।—१८—रंगपुर बगुड़ा के उ० जंगल में हाथी गैंड़े बहुत मिलते हैं । स० मु० रंगपुर । — १९ — दिनाजपुर रंगपुर के प० स० मु० दिनाजपुर पूर्ण बाबा नदी के द० क० । —२०—पुरनिया, दिनाजपुर के प० मोरिंग का पहाड़ और जंगल इस ज़िले के उ० पड़ता,है उसी को संस्कृत में किरात देश लिखा है स० मु० पुरनिया ।—२१—मालदह पुरनिया के द० स० मु० मालदह महानन्द नदी के बा० क० बस्ता है माल-दह से १०मी० द० गौड़का शहर किसी समय में गंगा कनारे बंगाले की राजधानी था । अब गंगा भी वहांसे आठ नौ मी० हटगई और शहर का भी केवल निशानही रहगया हुमायूं बादशाह ने उसका नाम जन्नताबाद रक्खा था, पुराना नाम लक्ष्मणावती है । —२२—मुर्शिदाबाद मालदह के द० स० मु० मुर्शिदाबाद भागीरथी के बा० क० बसा है । पहले उसका नाम मकसूदाबाद था सूबे बंगाले की जो बिहार से बर्मा तक

चला गया है राजधानी था।—२३—बीरभूम, मुर्शिदाबाद के प० स० मु० सिउडी वहां से ६० मील बा०। झाड़खंड के बीच देवगड़ में बैद्यनाथ महादेव का प्रसिद्ध मंदिर है और १५ मील प० नागोर का पुराना शहर वीरान पड़ा है उससे ७ मील पर बकलेसर में गर्म पानी का एक सोता है।—२४—बर्दवान (बर्द्धवान), बीरभूम के द०, स० मु० बर्दवान।—२५—हुगली बर्दवान के अ०, स० मु० हुगली भागीरथी के द० क०।—२६—मेदनीपुर, हुगली और हबड़ा के नै०, स० मु० मेदनीपुर।—२७—बलेश्वर, जिसे बालासोर भी कहतेहैं, मेदनीपुर के द०, स० मु० बलेश्वर बूढ़ीबलंग के द०, क० समुद्र से ८ मील पर बसा है।—२८—कटक, बलेश्वर के द०, संस्कृत में उसे उत्कल देश कहते हैं। बादशाही वक़ में अपने आस पास के ज़िलों समेत बंगाले की हद्द तक सूबे उड़ेसा लिखा जाता था, स० मु० कटक महानदी की दो धारा के बीच में बसा है।—२९—खुरदा अथवा पुरी, कटक के द० चिलका झील तक, स० मु० पुरुषोत्तमपुरी अथवा जगन्नाथ हिन्दुओंका बड़ा तीर्थ समुद्र के किनारे है।—३०—बांकुड़, बर्दवान के प०, स० मु० बांकुड़ा।—३१—भागलपुर, मुर्शिदाबाद के बा० विंध्य के पहाड़ पू० में इसी ज़िले तक हैं, फिर दक्षिण को मुड़जाते हैं। स० मु० भागलपुर गंगा के द० क०, २ मील के फ़ासिले पर बसा है वहां से ६० मील पू० अ० को ज़रा झुकता गंगा के उसी किनारे राजमहल है। भागलपुर से २ मंज़िल द० जंगलमें आध कोस ऊंचे मंदरगिर पर्वत पर हिन्दुओं का प्राचीन तीर्थ है।—३२—मुंगेर, भागलपुर के प०, स० मु० मुंगेर, जिसका असली नाम मुद्गिर बतलाते हैं, गंगा के द० क० सूबे बंगाले की सर-

हद्द पर बसा है। मुंगेरसे ५ मील पू० सीताकुण्डका गर्म सोता है।—३३—बिहार, मुंगेर के प०, द० भाग में पहाड़ है। स० मु० गया फल्गु नदी के बा० क० हिन्दुओं बड़ा तीर्थ है। बिहार गया से ४० मील ई० है, मुसल्मान बादशाहोंके वक्त में इसी शहर के नाम से यह सूबा, जो सूबे इलाहाबाद और बंगाले के बीच में पड़ा है, पुकारा जाता था। संस्कृतमें उसके द० भाग को मगध और उ० भाग को मिथिला लिखा है। किसी ज़माने में इसके आस पास बौध लोगोंके बड़े तीर्थथे। बिहार से १६ मील द राजग्रह जरासिंध की पुरानी राजधानी है। राजग्रह से ७५मील कुण्डलपुर रुक्मिनी का जन्मस्थान है। —३४—पटना अथवा अज़ीमाबाद, बिहार के प० बा० को झुकता, स० मु० पटना गंगा के द० क०, किसी समयमें मगध देश बरनसारे हिन्दुस्तान की राजधानी, और पाटलीपुत्र पद्मावती और कुसुमपुर के नाम से पुकारा जाता था। पटने से १० मील प० गंगा के द० क० दानापुर की छावनी है।—३५—तिरहुत अथवा तिरहुत, जिसे बाजे आदमी त्रिभुक्ति भी कहतेहैं, भागलपुर और मुंगेर के बा० उ० में तराई का जंगल है। गंडक और कोसी नदी के बीच जो देश है उसे संस्कृत में मिथिला और वैदेह कहते हैं, उसी का यह मानों मध्य भाग है, स० मु० मुज़फ़रपुर।—३६—शाहाबाद, पटने के प० शोण से लेकर कर्मनाशा नदी तक, जो सूबे बिहार की हद्द है स० मु० आरा। वहां से २ मंज़िल पू० गंगा के द० क० बक्सर का क़िला है और अनुमान ७५ मील द० नै० को झुकता प्राय: १००० फ़ुट ऊंचे पहाड़ पर शोण के बा० क० रुहतासका क़िला ऊजड़ पड़ा है।—३७—सारन जिसका शुद्धोच्चारण शरण है शाहाबाद के

उ०, स० मु० छपरा। वहां से दो मंज़िल पू० गंडक के बा० क० जहां गंगा के साथ उसका संगम हुआ है हाजीपुर में हर साल कार्त्तिकी पूर्णिमा को मेला हुआ करता है।—३८—चम्पारन सारन के द०, स० मु० मोतीहाड़ी पासही सुगौली की छावनी है।—३९—आशाम, सिलहट के उ०, ब्रह्मपुत्र के दोनों तरफ़ हिमालय में चीनकी सहद्द तक चला गयाहै। आशाम आईनी ज़िलों में नहीं गिना जाता, इसके लिये एक जुदा कमिश्नर और अजंट मुक़र्रर है, और उसके नीचे ६ बड़े असिस्टंट ६ जगहों में कचहरियां करते हैं। पहला ब्रह्मपुत्रके बा० क० स० मु० गोहाटि में। दूसरा गोहाटि से ७५ मील पू० ई० को झुकता नौगांव में। तीसरा गोहाटि से ६५ मील ई० ब्रह्मपुत्र के द० क० तेजपुर में। चौथा गोहाटि से ८० मील प० ब्रह्मपुत्र के बा० क० ग्वालपाड़े में। पांचवां गोहाटि से १६० मील ई० लखमपुर में। और छठा गोहाटि से १८० मील ई० पू० को झुकता शिवपुर अथवा शिवसागर में। गोहाटिसे ६५ मील द० खसियों के पहाड़ में, जिसे अंगरेज़ कोसिया कहते हैं समुद्र से ४५०० से फुट ऊंची चेरापूंजी साहिब लोगोंके हवा खानेकी जगहहै। अजंटो के तहत में २० राजा और सर्दार गिने जाते हैं, पर हम तो राजा और सर्दार के बदल उनको बनरखा कहेंगे, क्योंकि बन और झाड़ी यही उनकी मिल्कियत है। जंगल पहाड़ बहुत हैं, बिशेष करके पू० और उ० में, और उनकेबीच बहुतेरी जाति के जंगलीमनुष्य बसते हैं। आशामका प० भाग अब तक भी कामरूप पुकारा जाता है पर शास्त्र के बमूजिब रंगपुर, मैमनसिंह, सिलहट, जयंता, कचार, मनीपुर और आशाम, ये सब कामरूप ही ठहरते हैं संस्कृत में इसे प्राग्-

ज्योतिष भी कहते हैं। ६२° ५६' पू० दे० और २६° ३६' उ० अ० में कामाख्या देवी का प्रसिद्ध मंदिर है।—४०—नैर्ऋत कोन की सीमा और संभलपुर की अजंटी और छोटे नागपुर की कमिश्नरी बांकुड़ा के प०, यह एक बहुत बड़ा इलाक़ा है साहिब कमिश्नर के नीचे कई असिस्टंट रहते हैं, वही उसमें जगह जगह पर आईनी ज़िले के मेजिस्ट्रेटकलेकृरों की तरह कचहरियां करते हैं। साहिब कमिश्नर विलकिंसनपुर अथवा छोटे नागपुर में रहतेहैं छावनी कोस भर पर डोरंडा में है, हद्द इस इलाक़े की उ० को बीरभूम बिहार और मिरज़ापुर के ज़िलों से मिलताहै, और द०को गंजाम तक, जो मंदराजहाते का ज़िलाहै, चलीगई। पू० उसके बाजगुजार महालमेदनीपुर और बर्दवान है, और प० बघेलखंड का राज सागर नर्मदा और नागपुर का इलाक़ा है, इस इलाक़ेमें आबादी कम है और जंगल झाड़ी बहुत। पहाड़ों में गोंद चुआड़ कोल धांगड़ इत्यादि कई जाति के जंगली मनुष्य रहते हैं। इस में जो मुल्क सर्कारी बन्दोबस्त में कमिश्नरी से संबंध रखता है उसे छोटा(अथवा चोटिया)नागपुर मानभूम और हज़ारी बाग ३हिस्सों में बांटकर ३ असिस्टंटोंके ताबे कर दियाहै,पहले का० स० मु० लुहारडग्गा छोटे नागपुर से ४५ मील पू० दूसरे का पुरुलिया ७० मील पू० तीसरे का हज़ारीबाग़ ५० मील उ०। हज़ारी बाग़ के पास कई सोते गर्म पानी के हैं। हज़ारी बाग़ से अनुमान दो मंज़िल पू० सुमेर शिखर का पहाड़ जैनियों का बड़ा तीर्थ है अंगरेज़ उसे पार्श्वनाथ का पहाड़ कहते हैं अकसर वहां हवा खानेको जाते हैं। अजंटी के आधीन नाम को तो ५८ राजा हैं पर इख़्तियार उनके बहुत थोड़े।—४१—

बाजगुज़ार महाल नैर्ऋत कोन की सीमा और संभलपुर की अजंटी के पू० और* कटक और बलेश्वर के प० जंगल झाड़ी बहुत, राजा इन महालोंके केवल नाम मात्र हैं, इख़्तियार सब साहिब सुपरिंटंडंट का है, खंडलोग वहां अब तक आदमी का बल देतेहैं।-४२—नागपुर*नैर्ऋतकोनकी सीमा और संभलपुर की अजंटी के प०। यह बड़ाइलाक़ा नै० की तरफ़ हैदराबाद की अमल्दारी से जा मिला है। इस इलाक़े में कुछ हिस्सा सूबे गोंदवाने का बाक़ी सूबे बराड़ है इस बे आईनी ज़िले में भी आशाम और छोटे नागपुर की तरह एक कमिश्नर रहता है और उसके तहत में ५ डिपटी कमिश्नर आईनी ज़िले के कलक्टरों की तरह पांच ज़िलों में काम करतेहैं। पहला स० मु० नागपुर में। दूसरा नागपुर से ७० मील पू० रायपुर में। तीसरा ४० मील पू० बानगंगा के द० क० भंडारा में। चौथा ८० मील उ० चंदवारा में। पांचवां १०५ मील द० ज़रा अ० को झुकता बरदा नदी के बा० क० से ५ मीलके तफ़ावतपर चांदामें॥

अब वे सब ज़िले लिखे जाते हैं जो पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर के ताबे हैं।—५—दिल्ली, बलंद शहरके बा०, बादशाही ज़माने में इस नाम का एक सूबा गिना जाता था कि जिस की हद्द सूबे लाहौर से मिलती थी। स० मु० दिल्ली, जिसे बहुधा शाहजहानाबाद कहते हैं जमना के द० क० है। युधिष्ठिर महाराजने इस जगह इंद्रप्रस्थ बसाया था और तब से वह स्थान बराबर हिन्दुस्तान की राजधानी रहा पर कई

---

* अब यह जब्बलपुर की बे आईनी कमिश्नर के साथ मिलके एक जुदा चीफ़ कमिश्नरी होगया॥

दफ़ा बसा और कई दफ़ा उजड़ा, अब जो शहर मौजूद है अकबर के पोते शाहजहां का बसाया है नहर जमना की गली गली घूमी है। शहर पनाह संगीन क़िला लाल पत्थर का बहुत ख़ूबसूरत बना है, और भी बहुतसी इमारतें देखने के लाइक़ हैं।—२—गुड़गांवा दिल्ली के नै०, स० मु० गुड़गांवा। —३—झझर गुड़गांवे के उ०, स० मु० झझर। —४—रोहतक गुड़गांवे के उ०, स० मु० रोहतक।—५—हिसार, अथवा हरियाना रोह तक के बा० प० का झुकता, स० मु० हिसार। —६—सिरसा हिसार के बा० स० मु० सिरसा।—७—पानीपत, दिल्ली के उ०, स० मु० करनाल जमना की नहर के पास। —८—थानेसर, पानीपतके उ०, स० मु० थानेसर, जिसे संस्कृतमें स्थाणुतीर्थ और कुरुक्षेत्रकहतेहैं सरस्वतीके बा० क० हिंदुओंका बड़ा तीर्थ है।—९—अम्बला, थानेसरके उ०, स० मु० अम्बाला। —१०—लुधियाना, अम्बाले के बा०, स० मु० लुधियाना। सतलज की एक धारा के बा० क० पर बसा है।—११— फ़ीरोज़पुर लुधियानेके प०, स० मु० फ़ीरोज़पुर सतलजके बा० क०। इन ऊपर लिखे हुए चारों ज़िलों में दरख़्त बहुत कम हैं, कोसों तक सिवाय आक झड़बेरी के और कुछ भी दिखलाई नहीं देता। फ़ीरोज़पुर की गर्द मशहूर है।—१२— शिमला, हिमालय के पहाड़ों में अम्बाले से ६० मील उ० पू० का झुकता स० मु० शिमला समुद्र से ७२०० फ़ुट ऊंचे पहाड़ पर साहिब लोगों के हवा खाने की जगह है। शिमला से ३०मील इधर सबाठू की छावनीहै, और सबाठूसे बारहबारह तेरह तेरह मील इधर पास ही पास कसौली और डगसाई की छावनियां हैं। —१३—जालंधर लुधियाने के उ० बा० का झुकता सतलज पार

स० मु० जालंधर।—१४—हुशयारपुर, जालंधर के पू० स० मु० हुशयारपुर। —१५—कांगड़ा हुशयारपुर के ई० यह ज़िला बिलकुल हिमालय के पहाड़ों में बसा है। स० मु० कांगड़ा, जिसे नगरकोट भी कहते हैं, हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है। वहां से दो मंजिल बा० की तरफ़ नूरपूर बसा है, और १० मील ई० पू० को झुकता मणिकर्ण का तप्तकुण्ड है। कांगड़े से अनुमान ४० मील इधर व्यास नदी के ७ मील पार ज्वालामुखी हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है, पहाड़ में से आग निकलती है उसी को पूजा करते हैं। —१६—अमृतसर जलंधर के प० बा० को झुकता व्यास नदी पार, स० मु० अमृतसर सिखों का तीर्थ बड़े व्योपार की जगह है।—१७—वटाला अमृतसर के ई०, स० मु० गुरुदासपुर।—१८—लाहोर, अमृतसरके प०नै० को झुकता। बादशाही ज़माने में यही नाम इस सारे सूबे का था। स० मु० लाहोर अथवा लहावर कलकत्ते से ११०० मील और सड़क की राह १३५२ मील रावी के बा० क० ३१° ३६' उ० अ० ७४° ३' पू० दे० में बसा है पंजाब के लेफ़्टिनेंट गवर्नर इसी जगह रहते हैं।—१९—शेखूपुरा लाहोर के प० रावी पार स० मु० गुजरांवाला।—२०—सिआलकोट शेखूपुरे के उ०, स० मु० सियालकोट चनाब के बा० क० ५मील के तफ़ावत पर है।—२१—गुजरात सियालकोटके प० चनाब पार। स० मु० गुजरात चनाब के द० क० ५ मील के तफ़ावत पर है।—२२—शाहपुर गुजरात के नै०, स० मु० शाहपुर झेलम के बा० क० है।—२३—पिंडदादनख़ां गुजरात के प०, स० मु० झेलम, झेलम नदी के द० क० है। मंज़िल एक पर पहाड़ में सेंधे नमक की खान है —२४— रावलपिंडी पिंडदादनख़ां के उ०, स० मु०

रावलपिंडी। वहां से ६० मील प० बा० को झुकता सिंधु के बा० क० अटक का मशहूर क़िला है, कोई इसे अटक बनारस भी कहते हैं।—२५—पाकपट्टन लाहोर के द० नै० को झुकता सतलज और रावी के बीच में है स० मु० फ़तहपुर गुगेरा रावी के बा० क०,पाकपट्टन वहां से ४५मील द० अ० को झुकता सतलज के द० क० ६ मील के तफ़ावत पर है।—२६—मुल्तान, पाकपट्टन के प०। इसके द० और पू० भाग में रेगिस्तान है। बादशाही अमल्दारी में उसी नाम के सूबे की राजधानी था जिसकी हद्द ठट्ठे और कच्छ तक गिनी जाती थी। स० मु० मुल्तान चनाब के बा० क० से ४ मील पर बसा है।—२७—झंग मुल्तान के बा०, स० मु० झंग अथवा झंग सियाल चनाब के बा० क० है।—२८—खानगढ़ मुल्तान के द० बा० को झुकता। स० मु० खानगढ़।—२९—लइया खानगढ़ के उ०, स० मु० लइया सिंधु के बा० क० से १० मील पर बसा है। शास्त्र में इस ज़िले का नाम सिंधु सौवीर लिखा है।—३०-देरा ग़ाज़ीखां खानगढ़ के नै० सिंधु पार। स० मु० देराग़ाज़ीखां सिंधु के द० क० है।—३१—देराइस्माईलखां देराग़ाज़ीखां के उ०। स० मु० देराइस्माईलखां सिंधु के द० क० है। इस ज़िले में पिशौर के ७४मील इधर सिंधु के कनारे सेंधे नमक का पहाड़ है।—३२—हज़ारा, रावलपिंडी के बा० पहाड़ों के अन्दर। स० मु० हज़ारा।—३३—पिशौर हज़ारे के प० सिंधु पार। यह इस तरफ़ हिंदुस्तान का सबसे परला ज़िला है इससे आगे ख़ैबर के घाटे के पार जो शहर से १५ मील है अफ़ग़ानिस्तान का मुल्क शुरू होताहै। स० मु० पिशौर अथवा पिशावर सिंधु पार ४४मील के तफ़ावत पर बड़ी छावनीकी जगह है।

वहां से ८ मील पर काबुल की नदी बहती है।—३४—कोहाट पिशोर के द०, स० मु० कोहाट॥

नीचे वे ज़िले लिखे जाते हैं जो अवध के चीफ़ कमिश्नर के ताबे हैं, शास्त्र में इसे उ० कोशल कहा है और बादशाही दफ़्र में सूबे अवध लिखा जाता था।—१—उन्नाव, कान्हपुर के पू० गंगापार। स० मु० उन्नाव।—२—लखनऊ उन्नाव के ई०, स० मु० लखनऊ, जिसका असलीनाम लक्ष्मणावती बतलाते हैं कलकत्ते से ६१६मील बा० २८° ५१ ̀ उ० अ० और ८०°५० पू० दे० में गोमती के द० क० बसा है। साहिब चीफ़ कमिश्नर के रहने का मुक़ाम है।—३—रायबरेली, लखनऊ के द०। स० मु० रायबरेली सई नदी के बा० क०।—४—सुलतांपुर रायबरेली के पू०। स० मु० सुलतांपुर गोमती के बा० क०। —५—सलोन रायबरेली के द० अ० को झुकता, स० मु० सलोन। —६—फ़ैज़ाबाद, सुलतांपुर के उ०। स० मु० फ़ैज़ाबाद, पास ही सरयू के द० क०, अयोध्या का पुराना शहर रामचंद्र का जन्मस्थान हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है।—७—गोंड़ा, फ़ैज़ाबाद के बा० उ० को झुकता। स० मु० गोंड़ा।—८—बहराइच गोंड़ेके बा०। स० मु० बहराइच। वहां सुलतान मसऊदग़ाज़ी और रजब सालार का मक़बरा है।—९—मुल्लापुर, बहराइच के बा० घाघरा के द० क०। स० मु० मुल्लापुर।—१०—सीतापुर, मुल्लापुर के प०। स० मु० सीतापुर।—११—दर्याबाद, सीतापुर के बा०। स० मु० दर्याबाद।—१२—मुहम्मदी दर्याबादके उ०। स० मु० मुहम्मदी*॥

---

* सुनते हैं कि मुल्लापुर दर्याबाद मुहम्मदी और सलोन टूट गये और उनकी जगह पर हरदोई नवाबगंज लखीमपुर और परतापगढ़ ज़िले मुक़र्रर हुए॥

अब वे ज़िले लिखे जाते हैं जो मंदराज की गवर्नरी के ताबे हैं —१—गंजाम, कटक के द०, चिलकिया झील से सिकाकोल नदी तक, स० मु० गंजाम उसी नाम की नदी के ऊपर समुद्र के तट पर बसा है।—२—विजिगापट्टन, गंजामके नै०। स० मु० विजिगापट्टन जिसे विशाखपट्टन भी कहते हैं, समुद्र के तट पर है।—३—राजमहेंद्री विजिगापट्टन के नै०। स० मु० राजमहेंद्रवरं समुद्र से ५० मील गोदावरी के बा० क० है। इन ऊपर लिखे हुए तीनों ज़िलों के प० भाग में जंगल पहाड़ बहुत हैं।—४—मछलीबंदर, (मौसलीपट्टन), राजमहेंद्री के द० नै० को झुकता। इन दोनों ज़िलों का नाम शास्त्रमें कलिंग देश लिखा है, स० मु० मछलीबंदर समुद्र के तट पर है। —५—गंतूर मछलीबंदर के नै०। स० मु० गंतूर (मुर्तज़ानगर)। —६—नेल्लूरु, गंतूर के द०, स० मु० नेल्लूरु पन्नार (पेन्न) नदी के द० क०। इस नदी का शुद्ध नाम पिनाकिनी है।—७—कड़प, नेल्लूरु के प०। स० मु० कड़प (कृपा) उसी नामकी नदी के कनारे है।—८—बल्लारी कड़प के प० बा० को झुकता। स० मु० बल्लारी (बलहरी) हुगरा नदीके बा० क० से ४मील। वहां से २६ मील बा० तुंगभद्रा के द० क० बिजयनगर का प्रसिद्ध पुराना शहर उजड़ा हुआ पड़ा है।—९—चित्तूर, कड़पके द०। स० मु० चित्तूर (चेतूर)।—१०—अर्कॉडु (अर्काट) कड़प के द० स० मु० अर्काट, जिसे पण्डित लोग अरुकाटि भी कहते हैं, पालार नदी के द० क० सबे कर्नाटक की पुरानी राजधानी थी। अर्कॉडु से ८५ मील द० अ० को झुकता कडालूर का बंदर है।—११—चेंगलपट्टू, नेल्लरु के द०। स० मु० चेंगलपट्टू (सिंहलपेटा)। इसी ज़िले में मंदराज जिसका असल नाम

मंदिराज है, और जिसे चीनापट्टन भी कहते हैं, उस हाते की राजधानी कलकत्ते से ८५० मील और सड़ककी राह १०६३ मील १३° ५' उ० अ० और ८०° २१' पू० द० में ठीक समुद्र के तट पर बसा है, क़िला सेंट जार्ज का उसमें बहुत मज़बूत बना है। मंदराज से ३८ मील नै०को कुंजवरम् (कांचीपुर) का शहर है। महादेव का बहुत बड़ा मंदिर बना है। कोस एक पर बिष्णुकुंजी (बिष्णुकांची) में वरदराज बिष्णु का मंदिर है। —१२—शेलम अर्काडु के नै०। पहाड़ उस में ५००० फ़ुट तक ऊंचे हैं। स० मु० शेलम।—१३—तिरुच्चिनापल्ली, शेलम के द० अ० को झुकता। स० मु० तिरुच्चिनापल्ली कावेरी के द० क०। शहर के साम्हने कावेरी के एक सुन्दर टापू में श्रीरंगजी का बड़ाभारी मंदिर बनाहै।—१४—तंजाउरू (तंजोर) (तंजावर) (तंजनगर), जिसे संस्कृत में चोलदेश लिखा है, तिरुच्चिनापल्ली के पू०। बर्दवान के बाद ऐसा उपजाऊ दूसरा ज़िला नहीं है। स० मु० तंजोर कावेरी के द० क०। —१५—कोम्बुकोनम्(कुंभाकोनम्) तंजाउरूके पू० कावेरी के मुहानों में। स० मु० नागोर (नगर) समुद्र के तट पर। चोलबंशी राजाओं की पुरानी राजधानी कोम्बुकोनम् (कुंभघोन। वहां से ३५ मील प० बा० को झुकती कावेरी के टापू में है) —१६—मथुरा (मीनाक्षी), जिसे अंगरेज़ मदुरा कहते हैं, तंजोर के नै०। स० मु० मथुरा ब्यागारू नदी के द० क० वहां से कुमारी अंतरीप १२० मील रह जाता है। मथुरा से अनुमान ७५ मील अ० को रामेश्वर के टापू में, जहां ब्यागारू समुद्र से मिली है उससे थोड़ी ही दूर, पूर्व तट से मील एकके तफ़ावत पर सेतबंध रामेश्वर का प्रसिद्ध मंदिरहै।—१७—तिरुनेल्लूवलि

मथुरा के द० नै० को भुकता । स० मु० तिरुनेल्लूवलि से पू० समुद्र के तट तूतीकोरिन में गोतेखोर सीप से मोती निकालते हैं । —१८—कोयम्मुत्तूर, मथुरा के वा० । स०मु० कोयम्मुत्तूर से ४० मील वा० नीलगिर के पहाड़ पर उतकमंद समुद्र से कुछ ऊपर ७००० फुट ऊंचा साहिब लोगों के हवा खाने की जगह है । ऊपर लिखे हुये सातोंज़िले अर्थात् शेलम से कोयम्मुत्तूर तक, द्रविड देश में गिने जाते हैं ।—१६—मलीवार (मलय) (तिरियाराज) (केरल) कोयम्मुत्तूर के प० घाट उतर कर समुद्र तक, पार केरल देश उ० में चन्द्रगिर नदी तक गिना जाता है, इस हिसाब से अगले दो ज़िले भी इसी में समझने चाहियें । स० मु० कोच्ची समुद्र के तट परहै । —२०—कल्लीकोट, मलयवारके उ० । स० मु० कल्लीकोट समुद्र के तट पर है ।—२१—तेल्लिचेरी, कल्लीकोट के उ० । स० मु० तेल्लिचेरी (तालचेरी) समुद्र के तट पर है ।—२२—मंगलूर (कानडा) (तुलव) तेल्लिचेरी के उ० । स० मु० मंगलूर (कोडियालबंदर) समुद्र के तट पर है ।—२३—होनोर, मंगलूर के उ० गोवे तक, जो पुर्टगालवालों के दख़ल में है, यह ज़िला भी तुलव देश में गिना जाता है ॥

अब बम्बई हाते के ज़िले लिखे जाते हैं ।—१—धारवार गोवे के पू०, स० मु० धारवार (नसीराबाद) । —२—बेलगांव धारवार के वा० । स० मु० बेलगांव । —३—कोकण (कोंकण) बेलगांव के वा० । स० मु० रत्नगिर समुद्र के कनारे है ।—४—ठाणा, कोकण के उ० । स० मु० ठाणा साष्टी के टापू में जिसे वहांवाले झालता और शास्त्र और अंगरेज़ लोग सालसिट कहते हैं समुद्र के तट पर है । —५—बम्बई का टापू

साष्टी टापू के द० । पहले ये दोनों टापू जुदा जुदा थे, और इनके बीच में ४०० हाथ समुद्र की खाड़ी थी द० तरफ़ बंबई का टापू ६ मील लम्बा और २ मील चौड़ा था, और उ० तरफ़ साष्टी का टापू १८ मील लम्बा १३ मील चौड़ा था पर अब उन दोनों के बीच बंध बँधजाने से एक होगये। क़िला बंबई का मज़बूत है, समुद्र तीन तरफ़ उसकी खाई होगया है। बम्बई ५६^0 १८`उ० अ० और ७२$^0$ ५७` पू० दे० में उस हाते की राजधानी कलकत्ते से ६५० मील प० ज़रा नै० झुकता और सड़क की राह ११८५ मील पड़ता है। —६—पूना ठाणा के पू०। स० मु० पूना समुद्र से २००० फ़ुट ऊंचा मती नदीके द० क० है। पूना के द० नै० को झुकता अनुमान ५० मील और समुद्र के तट से ८५ मील प० घाट में महाबलेश्वर का पहाड़ समुद्र से ४५०० फ़ुट ऊंचा साहिब लोगों के हवा खाने की जगह है। कृष्णा नदी उसी जगह से निकली है, इस कारण हिन्दुओं का तीर्थ स्थान है। —७— सितारा, पूना के द०, स० मु० सितारा। वहां से १००मील पू०अ०को झुकता भीमा नदी के द० क० पंढरपुर हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है। सितारेसे १४० मील अ० बीजापुर। (विजयपुर) किसी समय में दक्खनके बादशाहों की राजधानी था और फिर दिल्ली के तहत में एक सूबा रहा। —८—शोलापुर सितारा के पू०, स० मु० शोलापुर। —६—अहमदनगर, पूना के ई० स० मु० अहमदनगर, बादशाही वक़्त में उसी नाम के सूबे की राजधानी था। —१०— नासिक अहमदनगर के बा० स० मु० नासिक गोदावरी के बा० क०। २०मील नै० पहाड़ पर त्रिम्बक का क़िला है। इसी पहाड़ से गोदावरी निकली है। —११—ख़ानदेश नासिक के उ०

और सातपुड़ पहाड़ के द० । बादशाही वक्त में अपने आस पास ज़िलों को लेकर यह भी एक सूबा था, स० मु० धूलिया पींजरा नदी पर। १०० मील पू० पहाड़ पर आसेरगढ़ का मज़बूत क़िला है।—१२—सूरत, खानदेश के प०। स० मु० सूरत तापी के बा० क०, किसी समय में सूबे खानदेश की राजधानी था। यहां तक अर्थात् नर्मदा के द०, जो ज़िले बम्बई हाते के ताबे हैं शास्त्र में प्रायः इन सब को महाराष्ट्र देश कहा है। —१३—भडोंच, सूरत के उ० स० मु० भडोंच जिसका असली नाम भृगुगोश बतलाते हैं, समुद्र से २५ मील नर्मदा के द० क०। —१४—खेड़ा भडोंच के उ०, गायकवाड़ की अमल्दारी से बहुत बेडौल मिल चुल रहा है, स० मु० खेड़ा दो छोटी छोटी नदियों के संगम पर है।—१५—अहमदाबाद, खेड़े के उ०, शास्त्र में सौराष्ट्र जिसे अब लोग सोरट*कहते हैं इसी देश को लिखा है। स० मु० अहमदाबाद साभरमती के बा० क० किसी ज़मानेमें यह शहर इसी नाम के सूबे की बहुत आबाद राजधानी था। —१६—सिंध समुद्र से सिंधु नदी के दोनों कनारे बहावल-पुर की अमल्दारी तक चला गया है, मुंज अंतरीप इस इलाक़े की समुद्र के तट में प० सीमा है। इसको ज़िला न कहकर एक कमिश्नरी कहना चाहिये; क्योंकि उसके लिये एक कमिश्नर मुक़र्रर है और कमिश्नर के नीचे तीन असिस्टंट बतौर कल-क्टर मजिस्ट्रेट के तीन ज़िलों में अर्थात् हैदराबाद करांची और शिकारपुर में काम करते हैं। इस इलाक़ेमें उजाड़ और रेगिस्तान बहुत है, परंतु सिंधु नदी के तटस्थ धरती उपजाऊहै। स० मु० अर्थात् कमिश्नर के रहने की जगह हैदराबाद सिंधु की उस

* कौन जाने सोरट से मुसल्मानों ने सूरत बना लियाहो॥

धारा के, जिसका नाम फुलाली है,द० क० पर बसा है। सिंधु की बड़ी धारा वहां से तीन मील प० है। हैदराबाद से अनुमान ५० मील द० ज़रा नै० को झुकता सिंधु के द०क०ठट्ठे का पुराना शहर है। किसी समय में बहुत आबाद था अब उसके बदल ५० मील प० हटकर करांची बन्दर ने रौनक़ पाई है। हैदराबाद से २१० मील द० शिकारपुर बड़े व्योपार की जगह है। हैदराबाद से २०० मील उ० ई० को झुकता सिंधुके एक टापूमें छोटीसी पहाड़ी पर भक्कर (बक्कर) का क़िला है, और क़िले के दोनों तरफ़, अर्थात् सिंधु के दोनों कनारों पर, रोड़ी और सक्कर दो शहर बस्ते हैं॥

निदान जितने मुल्क में सर्कार अंगरेज़ बहादुर की अमल्दारी है, अर्थात् जिसका पैसा सर्कारी ख़ज़ाने में आता है और जहां दीवानी फ़ौजदारी की कचहरियां सर्कार की तरफ़ से बैठी हैं, उतने का बर्णन हो चुका, अब जो शेष रहा वह हिन्दुस्तानियों के क़ब्ज़े में है। हम पहले उत्तराखण्ड फिर मध्य देश और तब उसके पीछे दक्षिण के रजवाड़ों का बर्णन करेंगे, यदि इनके सिवाय कोई और भी राजा महाराज नव्वाब इत्यादि सुन्ने में आवे, तो जानना कि वह वस्तुत: केवल ज़मींदार अथवा मुआफ़ीदार है, अर्थात् या तो सर्कार अथवा किसी और राजा को कर देता है, या उनकी दी हुई मुआफ़ी खाता है, दीवानी फ़ौजदारीका इख़्तियार नहींरखता। पस उनके इलाक़ों का ज़िक्र इन्हीं ऊपर लिखे हुए ज़िलों में आगया या नीचे लिखे हुए रजवाड़ों में आजावेगा॥

निदान उत्तराखण्ड में।—१—नयपाल, इसे प० में काल नदी जो मानसरोवर के द० हिमालयसे निकल सरयू में गिरती

है कमाऊं के सर्कारी इलाक़े से और पू० में कंकई नदी जो हिमालय से निकल दूसरी नदियों से मिलती मिलाती गंगा में जा गिरती है, शिकम के राज से जुदा करती है। उ० में हिमालय पार तिब्बत का मुल्क है, और द०में पहाड़ों से नीचे कुछ दूर तो अवध का इलाक़ा और फिर सूबे बिहार और बंगाले के सर्कारी ज़िले हैं। बिस्तार ५४५ मील मुरब्बा। आमदनी ३२००००० रुपया साल। राजधानी काठमांडू, जिस का शुद्ध नाम काष्ठमंदिर है, २७° ४२' उ० अ० और ८५°पू० दे० में विशनमती नदी के पू० क०, जहां वह बागमतीसे मिली है बंगाले के मैदान से प्राय: ४८०० फ़ुट ऊंचा बसा है। धेवलन का बर्फ़ी पहाड़ जो वहां से दिखलाई देता है, समुद्र से कुछ ऊपर २४६०० फ़ुट ऊंचा है, और चंद्रगिरि, जो काठमांडू के पास है, कुछ कम ८५०० फ़ुट ऊंचा होवेगा। काठमांडूसे ४१ मी० प० बा० को झुकती पहाड़ पर एक बस्ती गोरखा नाम नयपाल के बर्तमान राजाओं की क़दीम जन्मभूमि है, और इसी कारण बहुधा नयपालियों को गोरखिये और गोरखाली भी कहते हैं। गोरखनाथ का वहां मंदिर है। हिमालय के पहाड़ों में गंडक नदी के बा० तट से अति निकट मुक्तिनाथ हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है। —२—कश्मीर और जम्बू, रावी और सिंधु नदी के बीच प्राय: सारा कोहिस्तान इसी इलाक़ेमें गिनना चाहिये, बरन हिमालय पार लद्दाख़ का मुल्क भी जो हिन्दुस्तान की हद्द से बाहर है, अब इसी राज के शामिल है। बिस्तार २५००० मील मुरब्बा। हद्द उ० और पू० चीनकी अमल्दारी; प० अफ़ग़ानिस्तान, और द० पंजाब के सर्कारी ज़िले और चंबा और बिसहर के छोटे छोटे रजवाड़ों से मिली

है। आमदनी अनुमान 10000000 रुपया साल। कश्मीर की दून, पोथी और किताबों में बहुत प्रसिद्ध है। इसकी जहां तक तारीफ़ कीजिये सब थोड़ी है। वहां बरसात नहीं होती जाड़े के सिवाय सदा बहार बनी रहती है, जाड़ों में बर्फ़ पड़ती है। श्रीनगर कश्मीर की राजधानी ३३-^{0}२३` उ० अ० और ७४-$^{0}$४७` पू० दे० में समुद्र से ५५०० फ़ुट ऊंचा वितस्ता (झेलम) के दोनों कनारों पर डलझील के बग़ल में बहुत ख़ूबी के साथ बसा है। वहां से १०० मील द०, जहां से कोहिस्तान शुरू होता है, एक छोटी सी पहाड़ी पर जम्बू बसा है। श्रीनगर से ८ मंज़िल उ० बर्फ़ के पहाड़ों में अमरनाथ महादेव के दर्शन हैं। —३— शिकम, प० कंकई नदी नयपाल से और पू० तिष्ठा नदी भुटान से जुदा करती है, द० को कुछ दूर तक नयपाल और कुछ दूर तक सर्कारी इलाक़ा है, और उ० हिमालय पार चीन की अमल्दारी है। विस्तार १६०० मील मुरब्बा। राजधानी शिकम, जिसे दमूजंग भी कहते हैं, २७-^{0}१६` उ० अ० और ८८^{0}३ पू० दे० में झमोकूमा नदी के कनारे बसाहै। दार्जलिंग का पहाड़ समुद्र से ७००० फ़ुट ऊंचा सर्कार ने साहिब लोगोंके हवाख़ाने के वास्ते राजा से लेलिया है।—४—भुटान (भोट), यद्यपि हम लोग हिमालय की पर्वतस्थली में लहासे से लेकर लद्दाख़ पर्यन्त तिब्बत के सारे मुल्क को भुटान अथवा भोट कहते हैं, परंतु अंगरेज़ बहुधा इसी इलाक़े को भोट केनाम से लिखते हैं जिसका यहां बर्णन होता है। यह इलाक़ा सिकम के पू० हिन्दुस्तान के ई० में हिमालय के दर्मियान २०० मीलसे अधिक लंबा और प्रायः १०० मील चौड़ा चीन के ताबे है। राजा वहां का धर्मराजा साक्षात् बुद्ध का अवतार कहाता है, और जो

आदमी उसके नीचे मुल्क का कारोबार करता है उसे देवराजा पुकारते हैं। राजधानी तसीसूदन २७° ५` उ० अ० और ८९° ४०° पू० दे० में पहाड़ों के बीच बसा है।—५—चम्बा सुकेत और मंडी, ये तीनों पहाड़ी राज कश्मीर के अ० चनाब और सतलज के बीच में हैं। चम्बे का इलाक़ा रावी के दोनों तरफ़ कश्मीर की अमल्दारी से कांगड़े के सर्कारी ज़िले तक चला गया है। आमदनी १००००० रुपये सालसे कम है। राजधानी चम्बा, ३२° १०` उ० अ० और ७६° ५` पू० दे० में रावीके द० क० है। सुकेत सतलज से १२ मील द० क० ३१° २० उ० अ० और ७६° ५८` पू० दे० में बसाहै आमदनी अनुमान ८०००० रुपयासाल। और मंडी ३५०००० रु० साल की आमदनी का मुल्क सुकेत और सर्कारी ज़िले कांगड़े के बीच में पड़ाहै। राजधानी मंडी ३१° ४०` उ० अ० और ७६° ५३` पू० दे० में व्यासा नदीके बा० क० है। वहां से १० मील मैदान की तरफ़ रैवालसर हिन्दुओं का तीर्थ है।—६—सतलज और जमना के बीच पहाड़ी राजा राना और ठाकुरों के इलाक़े। इनमें कहलूर, सिरमौर और बिसहर, ये तीन तो अनुमान लाख लाख रु० साल की आमदनी के रजवाड़े हैं* और बाक़ी बारह ठाकुराइयों के राना तीस हज़ार से लेकर तीनसौ रु० साल तक की आमदनी रखतेहैं। कहलूर की राजधानी बिलासपुर ३१° १९` उ० अ० और ७६° ४५` पू० दे० में समुद्र से १५०० फ़ुट बलंद सतलज के बा० क० परहै। सिरमौर की राजधानी नाहन ३०° ३०` उ० अ० और ७७° ४५`

* चौथा रजवाड़ा हंडुर जिसकी राजधानी नालागढ़है और सर्कार ने ज़ब्त करके शिमला के ज़िलेमें शामिल करलिया था अब फिर छोड़दिया मलौन का मशहूर क़िला इसी राजमेंहै॥

पू० दे० में समुद्र से ३००० फ़ुट बलंद जमना से २० मील बा० क० है । बिसहर का इलाक़ा सतलज के बा० क० हिमालय पार चीन की हद्द से जामिला है । राजधानी उसकी रामपुर ३१° २१` उ० अ० और ७७° ३८` पू० दे० में समुद्र से ३३०० फ़ुट ऊंचा सतलज के बा० क० बसा है । कनाबर का परगना जहां साहिब लोग हवा खाने जाते हैं, और बरसात नहीं होती, इसी इलाके में है ।—७—गढ़वाल बिसहर की हद्द से मिला हुआ जमना और गंगा के बीच ४५०० मील मु० के बिस्तार में अनुमान १००००० रुपया साल की आमदनी का मुल्क है । राजा टीहरी में रहता है, वह ३०° २३` उ० अ० और ७८° २८` पू० दे० में समुद्र से २२०० फ़ुट बलंद गंगा के बा० क० है ॥

मध्यदेश के रजवाड़ों में ।—१—बघेलखंड इलाहाबाद और मिर्ज़ापुर के द० सोन के दोनों तरफ़ बिन्ध्य की पर्वत स्थली में बसा है । तीन तरफ़ सर्कारी अमल्दारी से घिरा हुआ प० बुंदेलखंड का इलाक़ा है । बिस्तार १०००० मील मु० । आमदनी २०००००० रु० साल । राजधानी रीवां (रेवा) बिछिया नदी के द० क० २४° ३४` उ० अ० और ८१° १६` पू० दे० में है ।—२—बुंदेलखंड पू० बघेलखंड है और प० ग्वालियर और उ० और द० सूबे इलाहाबाद के सर्कारी ज़िले । इस इलाक़े में दतिया, उरछा, चारखाड़ी, छतरपुर, अजयगढ़, पन्ना, समथर, और बिजावर ये ८ तो ६००० मील मु० के बिस्तार में रजवाड़े हैं, और बाक़ी २४ के क़रीब बहुत छोटे छोटे जागीरदार हैं, २५° ४३ उ० अ० और ७८° २५` पू० दे० में दतिया है आमदनी १०००००० । दतिया से ७५ मील द० अ० की झुकती टीहरी उरछा की राजधानी है, आमदनी ७००००० राजा के टीहरी में आरहने से पुरानी राजधानी उरछा

जो दतिया और टीहरी के बीच में वेत्वा के बा० क० है बैरौनक़ होगया। दतिया से ७५ मील पू० अ० को झुकती चारखाड़ी,। आमदनी ४००००० । दतिया से ८० मील अ० छतरपुर आमदनी ३००००० । दतिया से १२० मील अ० पू० को झुकता अजयगढ़, आमदनी ३२५० ०० । दतिया से ११० मील अ० पन्ना, आमदनी ४०००००, हीरे की खान है । दतियासे ३० मील ई० समथर, आमदनी ४५०००० और दतियासे १००मील अ० द० को झुकता बिजावर आमदनी२२५०००।—३—ग्वालियर अथवा संधियाकी अमल्दारी उ० सूबे अकबराबाद के सर्कारी ज़िले और धौलपुर और करौली के इलाक़े, पू० बुंदेलखंड भूपाल और सागर नर्मदा के सर्कारी ज़िले, प० जयपुर कोटा उदयपुर परतापगढ़ बांसवाड़ा और बड़ौदे के इलाक़े और उ० हैदराबाद और इन्दौर की अमल्दारियां । बिस्तार ३३००० मील मु० । आमदनी ०८०००००रु० साल । राजधानी ग्वालियर २६° १५' उ० अ० और ७८° १' पू० दे० में है । क़िला सर्कार के क़ब्ज़े में है । वहां से २६० मील नै० द० को झुकता १३° ११' उ० अ० और ७५° ३५' पू० दे० में सिप्रा नदी के द० क० उज्जैन (उज्जनी) (अवंती) का पुराना शहर है बादशाही ज़माने में सूबे मालवा (मालबदेश) की राजधानी था । ग्वालियरके द० बेत्वन्ती (बेत्वा)नदीके द० क० भिलसा । असली नाम उसका विल्वेश और भद्रावत बतलाते हैं । ग्वालियर से ४०० मील द० नै० को झुकता तापी के द० क० सूबे खानदेश की पुरानी राजधानी बुरहानपुर है । ४० मील द० नै० को झुकता काली सिंध के द० क० पहाड़ के नीचे नरवर का पुराना शहर और क़िला है २६० मील नै० नीमच में सर्कारी फ़ौज की छावनी है । —४—भूपाल प०

सागर नर्मदा के सर्कारी ज़िले और बाक़ी तीन तरफ़ ग्वालियर का राज। यह हिस्सा मालवे का पठानोंके दख़ल में है। विस्तार ७000 मील मु० आमदनी २२ 00000 रु० साल। राजधानी भूपाल जहां नव्वाब रहता है * २३° १०` उ० अ० और ७७° ३०` पू० दे० में है। वहांसे २० मील प० नै० को झुकती सिहोर में सर्कारी फ़ौजकी छावनी है। —५—इंदौर अथवा हुलकर की अमल्दारी पू० ग्वालियर, उ० ग्वालियर और धार और देवास, प० बड़ौदा और द० खानदेश के सर्कारी ज़िले। लंबान चौड़ान इस इलाक़े का नापना कठिन है क्योंकि बीच बीच में दूसरे इलाक़ों से बिशेष करके ग्वालियर से बहुत बेतरह मिल रहा है। बिस्तार ८000 मील मु०। आमदनी २२0000 रुपया साल। राजधानी इंदौर २२° ४२´ उ० अ० और ७५°५०` पू० दे० में है। सर्कारी फ़ौज की छावनी वहां से १० मी० द० मऊ में है। इंदौर से ४0 मील द० नै० को झुकता नर्मदा के द० क० महेशर (महेश्वती) सहस्रबाहु की बस्ती बतलाते हैं महेशर से ५ मील पू० नर्मदाके उसी कनारे मंडलेशर है, और मंडलेशर से थोड़ी ही दूर पू० नर्मदा के द० क० ओंकारनाथ महादेव का प्रसिद्ध मन्दिर है।—६—धार और देवास यह दोनों छोटे २ रजवाड़े हुलकर और संधिया की अमल्दारी के बीच में पड़े हैं। धारका बिस्तार १000 मील मुरब्बा, और आमदनी ४७५000 रु० साल। देवास की आमदनी कुछ न्यूनाधिक ४00000। धार की राजधानी धारानगर २२° ३५` उ० अ० और ७५° २४` पू० दे० में और देवास की राजधानी देवास २२° ५६` उ० अ० और ७६° १०` पू० दे० में है। धार

* इन दोनों गद्दों पर बेगम है॥

से अनुमान १५ मी० द० ज़रा अ० को झुकता प्राय: २०० फ़ुट समुद्र से ऊंचा, एक पहाड़ पर मांडू का मशहूर क़िला उजड़ पड़ा है। —७—बड़ोदा अथवा गायकवाड़ की अमल्दारी। हुलकर और संधिया की अमल्दारी के प० समुद्र पर्यन्त और उदयपुर और सिरोही के द० नर्मदा तक इसके बीच में बहुत जगह सर्कारी ज़िले भी आगये हैं। यह इलाक़ा सूबे गुजरात में है जिसको संस्कृत में गुर्जर देश कहते हैं। बिस्तार २४००० मील मु० से कम नहीं है। आमदनी अनुमान ७०००००० रु० साल। राजधानी बड़ोदा २२°२१' उ० अ० और ७३°२३' पू० दे० में बिश्वामित्र नदी के बा० क० बसा है। इस गुजरात में औरभी बहुत से राजा और नव्वाब हैं, पर उनके इलाक़े निहायत छोटे, यहां तक कि बहुतेरे उन में से एकही गांव के मालिक हैं, इसलिये हम ने उन सब को इसी अमल्दारी के साथ रखना मुनासिब समझा, बहुतेरे तो उन में से अब तक भी महाराज गायकवाड़ को कर देते हैं, और बहुतेरे सर्कारी की हिमायत में आगये हैं। गुजरात की प० सीमा पर द्वारिका का टापू, जिसे जगतखूंट भी कहते हैं। हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है। गुजरात के प्रायद्वीप की द० सीमा के ऊपर समुद्र के कनारे हरना कपिला और सरस्वती इन ३ नदियों के संगम पर जूनागढ़ वाले नव्वाब की जागीर में पट्टन सोमनाथ बना है। उसी में सोमनाथ महादेव का प्रसिद्ध मंदिर था। सोमनाथ के उ० अनुमान ४० मील जूनागढ़ के पास रैवताचल पर्वत पर, जिसे गिरनार और गिरनगर भी कहते हैं, जैनियों का बड़ा तीर्थ है। खम्भात नव्वाब की जागीर बड़ोदे से ३५ मील प० समुद्र की खाड़ी के कनारे मही नदी के मुहाने पर बसा है।

नव्वाब को इस जागीर से साल में ३०००००रु० वसूल हो रहता है। —८—कच्छ, बड़ौदे के प० बा० को झुकता हुआ। यह इलाक़ा टापू की तरह सब से निराला बसा है। उ० उसे समुद्र की खाड़ी गुजरात से जुदा करती है, प० उसे सिंधु की एक धारा सिंध से जुदा करती है, और बाक़ी दोनों तरफ़ वह रन से घिरा है, कि जो उसे उ० सिंध के सर्कारी ज़िलों से और पू० गुजरात से जुदा करता है। रन की असल संस्कृत अरण्य है। अरण्य का अर्थ जंगल उजाड़ है, पर यह तो जंगल नहीं बरन खारे पानी और रेत का एक बड़ा भारी दलदल है, बिस्तार इस रनका ८००० मील मु० से कम नहीं, बरसात में सारा जल मग्न होजाता है, पर दूसरी ऋतोंमें बहुत जगह सूख भी जाता है। कच्छ का इलाक़ा पू० से प० को १६० मील लंबा और रन समेत उ० से द० ६५ मील चौड़ा है। आमदनी ८००००० रु० साल। राजधानी भुज २३° १५′ उ० अ० और ६९° ५२′ पू० दे० में है। भुज से ३५ मील द० नै० को झुकता समुद्र के तट पर मंडवी बंदर है। —९—सिरोही। द० बड़ोदा पू० उदयपुर और प० और उ० जोधपुर। बिस्तार ३०००मील मु०। आमदनी १००००० रु० साल। राजधानी सिरोही २४° ५२′ उ० अ० और ७३° १५′ पू० दे० में है। वहां से १८ मील नै० आबू (अर्बुदाचल) के पहाड़ पर जो समुद्र से ५००० फुट ऊंचा है, जैनियों के मंदिर करोड़ों रुपये लागत के बहुत उमदा बनेहैं। साहिब लोगों के हवा खाने की जगह है। —१०— उदयपुर अथवा मेवाड़ प० उसे अर्बली पहाड़ सिरोही और जोधपुर से जुदा करता है, उ० अजमेर का सर्कारी ज़िला, द० बड़ौदा डूंगरपुर बांसवाड़ा और परतापगढ़ और पू० बूंदी और संधिया

की अमल्दारी है बिस्तार ११६०० मील मु०, आमदनी १२५०००० रु० साल । राजधानी उदयपुर २४°३२` उ० अ० और ७३°४४` पू० दे० में है। वहां से २२ मील उ० ई० को झुकता बनास नदी के द० क० श्रीनाथजी का प्रसिद्ध मंदिर, जिसे नाथद्वारा भी कहते हैं, हिन्दुओं का तीर्थ है । ७० मील पू० ई० को झुकता हुआ चितौड़ अथवा चीतौड़ का प्रसिद्ध पुराना क़िला पहाड़ पर ऊजड़ पड़ा है ।–११–डूंगरपुर बांसवाड़ा और परतापगढ़ ये तीनों छोटे छोटे इलाक़े प्राय: दो दो लाख रुपये साल की आमदनी के उदयपुर के द० संधिया और गायकवाड़ की अमल्दारी के बीच में पड़े हैं। डूंगरपुर का बिस्तार १००० मील मु० । उस्से पू० परतापगढ़ का बिस्तार १५०० मील मु० उन दोनों के द० बांसवाड़ेका बिस्तार भी १५०००मील मु० इन तीनों की राजधानियां डूंगरपुर २३°५४` उ० अ० और ७३°५०` पू० दे० में परतापगढ़ २४°२` उ० अ० और ७४°५१` पू०दे० में और बांसवाड़ा २३ ३१ उ० अ० और ७४° ३२` पू० दे० में है । —१२—बूंदी उदयपुर के पू० और उ०, कोटे के प०, और जयपुर के द० । बिस्तार २२०० मील मु० । आमदनी १००००० रु० साल । राजधानी बूंदी २५° २८` उ० अ० और ७५ ३० पू० दे० में है। –१३–कोटा उ० बूंदी के सिवाय कुछ दूर जयपुर से भी सरहद्द मिली हैं, बाक़ी सब तरफ़ संधिया की अमल्दारी है । बिस्तार ६५०० मील मु० । आमदनी ४५००००० रु० साल । लेकिन इसमें से तिहाई मुल्क सर्कार ने वहां के दीवान राजराना ज़ालिमसिंह की औलाद को दिलवा दिया, वे अब कोटे के द० अ० को झुकता ५० मील झालरापाटन में रहते हैं । राजधानी कोटा २५° १२` उ० अ० और ७५° ४५`

पू० दे० में चंवल के द० क० है। ये ऊपर लिखे हुए दोनों रज-वाड़े अर्थात् कोटा और बूंदी हाड़ोती में गिने जाते हैं।—१४—टोंक बूंदी के उ० जयपुर की अमल्दारीसे घिरा हुआ १०००००० रु० सालकी आमदनी का इलाका नव्वाब मीरखां की औलाद के क़ब्ज़े में है। राजधानी टोंक २६° १२ʹ उ० अ० और ७५°३८ʹ पू० दे० में है। कुछ थोड़ी सी ज़मीन नव्वाब की शिरौंज (शेर-गंज) के साथ कोटे और ग्वालियर की अमल्दारी के बीच में और नीमबड़ेहा मेवाड़ के दर्मियान है। सबका मिलाकर विस्तार १८०० मील मु० होता है।—१५—जयपुर अथवा ढुंढार द० टोंक बूंदी कोटा और करौली, उ० बीकानेर और अलवर, पू० भरतपुर प० जोधपुर किशनगढ़ और सर्कारी ज़िला अज-मेर का। विस्तार १५००० मील मु०। धरती बहुधा रेतल, उ० शेखावाटी में छोटे छोटे पहाड़ भी हैं। राजधानी जयपुर, (जयनगर) २६° ५५ʹ उ० अ० और ७५° ३०ʹ पू० दे० में बहुत क़रीने के साथ बसा है। वहां से ७५ मील अ० रणथंभोर का प्रसिद्ध मज़बूत क़िला है।—१६—करौली। उ० और प० जयपुर, द० ग्वालियर और पू० धौलपुर। विस्तार १६००मील मु०। आमदनी ५००००० रु० साल। राजधानी करौली २६° ३२ʹ उ० अ० और ७६° ५५ʹ पू० दे० में पुषपेरी नदी के तट पर बसी है।—१७—धौलपुर। प० करौली, द० ग्वालियर, उ० भरतपुर पू० सर्कारी ज़िला आगरे का। विस्तार १६२५ मील मु० आमदनी ७००००० रु० साल। राजधानी धौलपुर २६°४२ʹ उ० अ० और ७७°४४ʹ पू० दे० में चंबलके बा० क० है।—१८—भरतपुर। द० धौलपुर, उ० अलवर प० जयपुर, पू० आगरा और मथुरा के सर्कारी ज़िले। विस्तार २००० मील मु०। आमदनी२००००००रु० साल। राजधानी

भरतपुर २७° १६' उ० अ० और ७७° ०३' पू० दे० में है। वहां से १४ मील पर डीग में बहुत उमदा बाग़ है। एक मंज़िल द० नै० को भुकता बयाने का मशहूर क़िला। एक पहाड़ी पर बेमरम्मत पड़ा है।—१६—अलवर अथवा माचेड़ी द० भरतपुर और जयपुर, प० केवल जयपुर, और पू० और उ० मथुरा और गुडगांवे के सर्कारी ज़िले। बिस्तार ३५०० मील मु०। आमदनी १८०००० रु० साल। मेवात का बहुतसा हिस्सा इसी इलाक़े में पड़ा है। राजधानी अलवर २७° ४४' उ० अ० और ७६° ३२' पू० दे० में है। —२०—किशनगढ़ पू० और द० जयपुर, और उ० और प० जोधपुर और अजमेर का सर्कारी ज़िला। बिस्तार ७०० मील मु०। आमदनी ३०००० रु०साल। राजधानी किशनगढ़ २६° ३७' उ० अ० और ७४° ४३' पू० दे० में है।—२१—जोधपुर अथवा मारवाड़। पू० जयपुर सर्कारी ज़िला अजमेर का और उदयपुर, द० उदयपुर सिरोही और बड़ौदा, प० सिंध और जेसलमेर, और उ० जैसलमेर और बीकानेर। बिस्तार ३५००० मील मु०। आमदनी ७००००० रु० साल। राजधानी जोधपुर २६° १८' उ० अ० और ७३° पू० दे० में है।—२२—बीकानेर। द० जोधपुर और जयपुर, उ० बहावलपुर और पटियाला, प० जैसलमेर, और पू० सर्कारी ज़िला हरियाने का। बीकानेर और जेसलमेर और बहावलपुर की अमल्दारियों के बीच बड़ा भारी रेगिस्तान है बिस्तार ७०००० मील मु०। आमदनी ६५०००० रु० साल। राजधानी बीकानेर २७° ५७' उ० अ० और ७३° २' पू० दे० में है।—२३—जैसलमेर। पू० बीकानेर, प० सिंध, उ० बहावलपुर, द० जोधपुर। बिस्तार १२००० मील मु०। आमदनी १०००० रु० साल। राजधानी जैसलमेर, २६° ४३' उ० अ०

और ७०° ५४' पू० दे० में है। ये ऊपर लिखे हुए पन्द्रहों इलाक़े अर्थात् सिरोही से जैसलमेर तक राजपुताने में गिने जाते हैं। —२४— बहावलपुर। द० जैसलमेर और बीकानेर, उ० पंजाब के सर्कारी ज़िले, प० सिंध और पू० बीकानेर और पटियाला। बिस्तार प्राय: २०००० मील मु०। आमदनी १५०००००रु० साल, नव्वाब के रहने की जगह अर्थात् राजधानी बहावलपुर। २९' १९° उ० अ० और ७१' २०° पू०दे०में सतलज के, जिसे वहां गर्रा कहते हैं, बा० क० बसा है, वहांसे ३०मील प० नै० को झुकता पंजनद के, जो चनाब से मिलने पर सतलज का नाम रह गया है, बा० क० उच्च का पुराना शहर है।—२५—अंबाले की अजंटी के ताबे रजवाड़े। बहावलपुर के पू० ये इलाक़े प० और प० द० कुछ दूर तक बीकानेर की अमल्दारी से मिले हैं बाक़ी सब तरफ़ सर्कारी ज़िलों से घिरे हैं। इन में सब से बड़ा इलाक़ा महाराजे पटियाले का, जो क़ौम के सिक्ख हैं, बहावलपुर की हद्द से लेकर पहाड़ों में शिमला तक चला गया है, पर बीच बीच में दूसरे इलाक़े भी आगये हैं। बिस्तार ४५०० मील मु०। आमदनी २००००००रु० साल। राजधानी पटियाला ३०° १९' उ० अ० और ७६° २२' पू० दे० में है बहावलपुर की हद्द की तरफ़ लुधियानेसे ७५ मील नै० बटिंडेका क़िला है उसी के गिर्दनवाह को लखी जंगल कहते हैं, जहां के घोड़े मशहूर हैं। पटियाले से २५ मील उ० सरहिन्द है। बाक़ी रजवाड़े जिनके रईसों को अपने इलाक़े में दीवानी फ़ौजदारी का इख़्तियार हासिल है, इस अजंटी में नाभा जींद मालेर कोटला फ़रीदकोट ममदौत बढ़िया छिछरौली और रायकोट हैं। बिस्तार इन सबका २२०० मील

मु० । इनमें नाभाजींद और मालेरकोटला ये तीनों तो तीन तीन लाख रुपये साल की आमदनी के हैं, और बाक़ी सब इलाक़े बहुत छोटे छोटे हैं । मालेरकोटला फ़रीदकोट और ममदोत में मुसल्मानों की अमल्दारी है, तीनों रईस नव्वाब कहलाते हैं । नाभा पटियालेसे १५ मील प० बा० को झुकता । जींद ७० मील द० । और मालेरकोटला ३० मील बा० । फ़रीदकोट १०५ मील प० नै० को झुकता । ममदोत १३० मील प० बा० को झुकता । बूढ़िया ६० मील पू० अ० को झुकता । छिछरौली ६० मील प० । और रायकोट ४० मील ई० । —२६—कपूरथला अथवा सिख राजा आलूवालिये का इलाक़ा । सतलज और ब्यासा के बीच चारों तरफ़ पंजाब के सर्कारी ज़िलोंसे छिपा हुआ । आमदनी २०००००० रु० साल । राजधानी कपूरथला ३१° २४` उ० अ० और ७५° २१` पू० दे० में ब्यासा नदी के बा० क० १० मील हटकर बसा है । —२७—रुहेलों का रामपुर मुरादाबाद और बरेली के सर्कारी ज़िलोंसे घिरा हुआ । बिस्तार ७०० मीलमु० । आमदनी १०००००० रु० साल रामपुर नव्वाब के रहने की जगह २८° ४६` उ० अ० और ७८° ५२` पू० दे० में कोशिल्या नदी के बा० क० बसा है । —२८—मनीपुर ब्रह्मपुत्र के पार हिन्दुस्तान की पू० हद्द पर है । प० और उ० सिलहट और आशाम के सर्कारी ज़िलों से और पू० और द० ब्रह्मा की अमल्दारी से मिला हुआ है । बिस्तार ७५०० मील मु० । आमदनी १००००० रु० साल से कम । राजधानी मनीपुर २४° ३०` उ० अ० और ६४° ३०` पू० दे० में उसी नाम की नदी के द० क० है । अंगरेज़ इसे कसाइयों का मुल्क कहते हैं, क्योंकि ब्रह्मावाले उन्हें कासी पुकारते हैं, लेकिन बंगाली

उन्हें मघालू कहते हैं और वे अपनी क़ौम का नाम मोइते बतलाते हैं॥

अब इस से आगे दक्षिण के रजवाड़े लिखे जाते हैं।

—१—हैदराबाद, यह इलाक़ा तापी नदी से लेकर, जहां वह सैंधिया की अमल्दारी से मिलता है, दक्षिण में तुंगभद्रा और कृष्णा नदी तक चला गया है। ई० की तरफ़ बरदा नदी प्राणहत्या में और प्राणहत्या गोदावरी में मिलकर इसे नागपुर के इलाक़े से जुदा करती है, और बाक़ी सब तरफ़ वह जंगल बंबई और मंदराज हाते के सर्कारी ज़िलों से घिरा हुआ है। जिस ज़मीन का नाम संस्कृत में तैलंग देश है, वह बहुत सी इस इलाक़े के अंदर आगई है * बिस्तार इसका प्रायः १००००० मील मु० है। और आमदनी १४०००००० रु० साल अनुमान की जाती है, पर नव्वाब के ख़ज़ाने में आधी भी नहीं आती। बादशाही ज़माने में यह एक सूबा गिना जाता था लेकिन अब हद्दों में बड़ा फ़र्क़ आगया। राजधानी हैदराबाद, जिसका नाम कभी भागनगर भी बतलाते हैं, १७°१५′ उ० अ० और ७८° ३५′ पू० दे० में मूसा नदी के द० क० बसा है। ६ मील प० पहाड़ पर गोलकुंडे का प्रसिद्ध मज़बूत क़िला है, और ३ मील उ० सिकंदराबाद में सर्कारी फ़ौज की छावनी है। हैदराबाद से ३०० मील बा० औरंगाबाद है जो मुसल्मानों की बादशाहत में उस नामके सूबेकी राजधानी था, पुरानानाम उसका

*बराड़ का इलाक़ा नव्वाब ने सर्कार के हवाले कर दिया है और वह एक जुदा चीफ कमिश्नरी मुक़र्रर किया गया है उस में पूरब और पच्छिम दो कमिश्नरी और छ ज़िले अर्थात् उमरावती एलिचपुर ऊन अकोला बुलदना और बासिम हैं॥

गर्क है। औरंगाबादसे ७मील बा० दौलताबादका अद्भुत क़िला पहाड़ पर बना है, बनावट में इस से बढ़कर मज़बूत दूसरा क़िला अब तक सुनने में नहीं आया, पहले इसकानाम देवगढ़ था। दौलताबादसे ७मील बा० इलूरू गांवके पास जिसे अंगरेज़ इलोरा कहते हैं, एक मील लंबे अर्द्ध चंद्राकार पहाड़ को काटकर महा अद्भुत मन्दिर बनाये हैं। हैदराबादसे ८३ मील बा० बिदर (बिदर्भ) का पुराना शहरहै। बादशाही अमल्दारी में उसके साथ उसी नामका एक सूबा गिना जाता था। हैदराबाद से १३५ मील उ० बा० को झुकता गोदावरी के बा० क० नांदेड़ जो किसी समय उस नाम के सूबे को राजधानी था सिक्खोंका तीर्थ है। —२—मैसूर हैदराबाद के द० चारों तरफ़ सर्कारी ज़िलों से घिरा हुआ। बिस्तार ३०००० मील मु०। आमदनी १०००००० रु० साल। राजधानी-मैसूर (महेशुर) जिसका शुद्धनाम महिषसुर बतलाते हैं १२° १६' उ० अ०,७६° ४२' पू० दे० में है। वहां से ६ मील उ० श्रीरंगपट्टन है, और ७० मील ई० बंगलूर की छावनी है। इख़्तियार इस इलाक़े में बिलकुल साहिब कमिश्नर का आमदनी हुकूमत का ख़र्च काटकर राजा को दी जाती है*कुड़ग का सर्कारी इलाक़ा भी मैसूर और कानडे के बीच में इसी कमिश्नर के ताबे है, पर कांड़े में एक असिस्टंट रहता है।—३— कोच्ची अथवा कच्छी, जिसे अंगरेज़ कोचीन कहते हैं, मैसूर के द०। प० समुद्र द० त्रिवांकोडू बाक़ी दोनों तरफ़ सर्कारी ज़िले हैं। बिस्तार २०००मील मु०। आमदनी ५०००००रु० साल। राजधानी कोच्ची जिसका

* अब यह इलाक़ा राजा को हवाले करदेने का हुक्म हो गया है लेकिन राजा नाबालिग़ है॥

भिकर मलयबार के ज़िले में हुआ सर्कार के क़ब्ज़े में है। —४—त्रिवांकोडू अथवा तिरुवनंतपुर। उ० कान्ची द० और प० समुद्र, और पू० सर्कारी ज़िले मथुरा और तिरुनेल्लूवलि के। बिस्तार ५००० मील मु०। आमदनी ४००००० रु० साल। राजधानी त्रिविंद्रम, ८° ६` उ० अ० ७६° ३०` पू० दे० में है।—५—कोलापुर हैदराबाद के प० चारों तरफ़ सर्कारी ज़िलोंसे घिरा हुआ। बिस्तार ३५०० मील मु०। आमदनी १५००००० रु० साल राजधानी कोलापुर १६° १६` उ० अ० ७४° २५` पू० दे० में एक नदीके समीप पहाड़ों के बीचहै।—६—सावंतबाड़ी कोलापुर के नै० और गोवे के उ० पश्चिमघाट और समुद्र के बीच। बिस्तार १००० मील मु०। आमदनी २०००० रु० साल। राजधानी बाड़ी १५° ५६` उ० अ० ७४° पू० दे० में है। इंनिज़ाम इलाक़े में सर्कारी है, आमदनी हुकूमत का ख़र्च काटकर राजाको दी जाती है॥

सिवाय सर्कारी और हिन्दुस्तानी अमल्दारियों के, जिनका ऊपर वर्णन हुआ, कुछ थोड़ी २ सी ज़मीन हिन्दुस्तानमें फ़रासीस डेनमार्क और पुर्टगाल के बादशाहों के भी दख़ल में है। फ़रासीसवालों के दख़ल में पटुच्चेरी, जिसे अंगरेज़ पांडुचेरी कहते हैं द० में पालार और कावेरी के मुहानों के बीच समुद्र के तट पर ११° ५५` उ० अ० ७९° ५१` पू० दे० में और कारीकाल समुद्र के तट कावेरी के मुहाने पर १०° ५५` उ० अ० ७९° ४४` पू० दे० में, और चंदर नगर बंगाले में गंगाके बा० क० २२° ५१` उ० अ० ८८° २९` पू० दे० में बसाहै। ६२ गांव पटुच्चेरी के साथ हैं और १०० कारीकाल के इलाक़े में। सिवाय इसके थोड़ी थोड़ी सी ज़मीनें और भी चार पांच शहरों में हैं। आमदनी सबकी सन् १८३८ ई० में ३०८६६३ रु० साल ठहरीथी।

डेनमार्क के बादशाह के दख़ल में तिरकमबाड़ी समुद्र के तट कावेरी की एक धारा के मुहाने पर १०°६१` उ० अ० ७६°५५` पू० दे० में १३ गांवके साथ है अठारह बीस बीघे इस बादशाह की ज़मीन बलेश्वर में भी है। पुर्टगालवालों के दख़ल में गोवेका इलाक़ा सावंतबाड़ी कानड़ा पश्चिमघाट और समुद्र के बीच में है। लंबा ६३ मील चौड़ा ३३ मील तक। आमदनी ६०००० रु० साल। राजधानी पुरानी अर्थात् गोवा १५°३०` उ० अ० ७४° २` पू० दे० में अब वैरानक़ होगयाहै, गवर्नर ५ मील प० समुद्र के तटपर पंजिम में रहता है॥

निदान इस भारत वर्षमें जो सब देश प्रदेश और नदी पर्वत हैं। थोड़ा बहुत उन सब का वर्णन होचुका, यदि उन्हें किसी दीवार पर लटकाये हुए नक़शे में देखो तो साफ़ नज़र पड़ जायगा कि ऊपर अर्थात् उत्तर में सिंधु नदी से लेकर ब्रह्मपुत्र तक सरासर हिमालय पहाड़ की श्रेणी चली गई है, जिस में उत्तराखंड के सुन्दर ठंडे और अतिरम्य और मनोहर मुल्क बसते हैं शास्त्र में भी उसकी बड़ी प्रशंसा की है। उदासीन जनों के चित्त को उस से अधिक प्यारा दूसरा कोई स्थान नहीं है। इन पहाड़ों की जड़ में कोई तीस चालीस मील चौड़ा बड़े भारी घने जंगलों से घिरा हुआ वह स्थानहै जिसे तराई कहते हैं। गर्मी और बरसात में इस तराई की हवा, विशेष करके नयपाल से नीचे नीचे, ऐसी बिगड़ जाती है कि बहुधा पशु पक्षी भी अपनी जान बचाने के लिये वहां से निकल भागते हैं। बायें हाथ, अर्थात् पश्चिम को जोधपुर, जैसलमेर, बीकानेर, और सिंध और बहावलपुर के वे हिस्से, जो सतलज और सिंध के कनारों से दूर हैं रेगिस्तान के पट-

पर मैदान में बसे हैं, जहां पानी भी कम और तृण बीरुध का भी अभाव, जिधर देखो समुद्र की लहरों की तरह बालू के टीले दिखलाई देते हैं। जब गर्मियों में लूएं चलती हैं और आंधियां आती हैं और वह बालू गर्म होकर हवा में उड़ती है, तो मानों बदन पर छर्रे बरसने लगते हैं, देखते ही देखते टीले उड़कर एक जगह से दूसरी जगह इकट्ठा होजाते हैं, अक्सर आदमी इस तरह के ख़तरे में आये हैं और रेतके नीचे दब कर मर गये हैं। वहां सिवाय ऊंट के और किसी भी सवारी का गुज़र नहीं हो सक्ता, बहुधा मुसाफ़िर लोग रात को तारों के निशान से चलते हैं, नहीं तो रेगिस्तान में सड़क पगडंडी वस्ती पेड़ इत्यादि चीज़ोंका आसरा और पता कुछ भी नहीं मिलता, केवल कहीं कहीं फोक झड़ बेरी आक और करील अवश्य नज़र पड़ जाते हैं। अर्बली पहाड़, जो सिरोही और जोधपुर को उदयपुर सर्कारी ज़िले अजमेर और किशनगढ़ से जुदा करता शेखावाटी और अलवर की अमल्दारी में होता हुआ दिल्ली के पास जमना के कनारे तक चला गया है, इस मरुदेश की पूर्व सीमा है। दहने हाथ अर्थात् पूर्व की तरफ़ सूबे बंगाला, समुद्र और हिमालय के बीच सीधा बट्टाढाल, जिस में पहाड़ तो क्या कहीं पत्थर का रोड़ा भी देखने को नहीं मिलता, नदियोंकी बहुतायत से ऐसा सेराब है कि बरसात में प्रायः आधेसे अधिक जलमग्न होजाता है, आबादी बहुत धरती उपजाऊ पर्ले सिरे की धान हर तरफ़ लहलहाते हैं। पूर्व भाग में बर्म्हा की सहद्द पर ऐसे सघन और अगम्य जंगल पड़े हैं कि जैसा उत्तर में इस देशको हिमालय से बचाव है वैसाही इधर इन जंगलों की मानों

दीवार खड़ी है, शत्रु उस राह से कदापि नहीं आसक्ता। निदान यह बंगाले का मैदान नदियों से सिंचा हुआ गंगा के दोनों तरफ़ हिमालय और बिंध्य के बीच हरिद्वार तक चला गया है, इस में गंगा यमना के बीच जो देश पड़ा है उसे अंतरबेद और दुआबा भी कहते हैं, और येही दो चार सूबे अर्थात् दिल्ली आगरा अवध और इलाहाबाद यथार्थ मध्यदेश, अर्थात् असली हिन्दुस्तान हैं। वायु कोनमें सिक्खों का मुल्क पंजाब है, जिसके पांचों दुआबे जिन २ नदियों के बीच में पड़े हैं उन दोनों नदियों के नाम के हर्फ़ोंसे पुकारे जाते हैं, जैसे व्यासा और सतलज के बीच में दुआबेबस्त जालंधर, व्यासा और रावी के बीच में दुआबेबरी, रावी और चनाब के बीच में दुआबेरचना, झेलम और चनाब के बीच में दुआबेजच, और झेलम और सिंधु के बीच सिंधुसागर दुआब मध्य में बिंध्याचल के तटस्थ नर्मदा और शोण के कनारों पर और फिर शोण के कनारे से सूबे उड़ेसा और नागपुर के बीच में गोदावरी तक ये सब जंगल और झाड़ झंखाड़ और उजाड़ पड़ेहैं जिनमें भील गोंद धांगड़ केल चुवाड़ और संठल इत्यादि असभ्य अर्द्ध बनमानस तुल्य प्राय: जंगली मनुष्य बसतेहैं। नीचे नर्मदा पार दक्षिण देश, पूर्व और पश्चिम घाटों के बीच, एक चबूतरा सा उठा हुआ, ज्यों ज्यों दक्षिण गया ऊंचा होतागया यहां तक कि मैसूर की धरती प्राय: ३००० फ़ुट समुद्रसे बलंद है, और बलंदी के सबब मौसिम भी वहां अच्छा रहता है, गर्मी की शिद्दत नहीं होती। यह ऊंचा देश दोनों घाटों के बीच कृष्णा नदी से दक्षिण बालाघाट कहलाता है, और घाटों से उतरकर समुद्रकी तरफ़ जो नीचा देश है वह पाईं घाट।

असल में कर्नाटक उसी बालाघाट का नाम था, पर अब अंगरेज़ लोग पाईंघाट को भी उसी नाम से पुकारते हैं, और कृष्णा के मुहाने से कावेरी के मुहाने तक समुद्र के तटस्थ देश को कारोमंडल भी कहते हैं, कारोमंडल चोलमंडल का अपभ्रंश मालूम होता है कि जो नाम अब तक भी वहांवालों की ज़ुबान पर जारी है। इस कनारे समुद्र के निकट धरती बिलकुल रेतल और ऊसर है। कृष्णा पार दक्षिण देश में मुसल्मानों का राज्य पक्का न जमने के कारन वहां अब भी बहुतेरी बातें असली हिन्दू धर्म की देख पड़ती हैं, मंदिर और शिवालय बहुत बड़े बड़े प्राचीन बने हुए, धर्मशाला और सदावर्त्त हर तरफ़ मुसाफ़िरों के लिये, ब्राह्मण बेदपाठी और अग्निहोत्री जगह जगह बहुतायत से और नाम नगर और ग्रामों के अहमद महमूद पर कम, अक्सर वेही पुराने हिन्दी चले जाते हैं। यद्यपी हिसाब से प्राय: दो तिहाई मुल्क, अर्थात् प्राय: सात लाख मील मुरब्बा, अब भी हिन्दुस्तानियों के दख़ल में है, परंतु वह आबादी और आमदनी में सर्कारी मुल्क के आधे हिस्से की भी बराबरी नहीं कर सक्ता। सर्कारी अमल्दारी में नौ करोड़ आदमी बसते हैं, हिन्दुस्तानी अमल्दारी में कुल पांच करोड़। सर्कार के यहां पचास करोड़ रुपया तहसील होता है, हिन्दुस्तानियों को ग्यारह करोड़ भी पल्ले नहीं पड़ता। यह केवल नीयत की बर्कत है और इन्तिज़ाम की ख़ूबी है॥

॥ लंका ॥

यह टापू हिन्दुस्तान के द० सेतबंध रामेश्वर के साम्हने है, इसी का नाम सिंहलद्वीप है, मुसल्मान सरन्दीप और अंगरेज़ सिलोन कहते हैं बौधों ने इसे ताम्रपर्णी के नाम से लिखा

है। लंबान २०० मील चौड़ान १०५ मील, घेरा ७५० मील। पहाड़ ८००० फुट तक ऊंचे। नदी सब से बड़ी महाबली गंगा १०० मील लंबी। अमल वहां अंगरेज़ों का। आमदनी ३३०००००, रुपये साल। राजधानी कोलम्ब जहां गवर्नर रहता है, ६° ५७ उ० अ० ८०° पू० दे० में उस टापूके प० समुद्र के तट पर बसा है। कोलम्ब से ६० मील ई० कांडी पुरानी राजधानी है। कोलम्ब से ४५ मील पू० अ० को झुकाता हमाल्ल पहाड़ पर, जिसे अंगरेज़ आदम का शिखर कहते हैं, दो फुट लंबा आदमी के पैर का एक निशान बना है। सिंहली कहते हैं कि वह बुद्ध के पैर का निशान है, और मुसल्मान उसे आदम के पैर का बतलाते हैं। मत वहांवालों का बौद्ध है॥

॥ बर्म्हा ॥

एशिया के अ० में हिन्दुस्तान के पू० ६° से २६° उ० अ० तक, और ९२° से १०४° पू० दे० तक। वहांवाले उसका नाम म्रन्मा बतलाते हैं, ब्रह्मा बर्म्हा बर्मा इत्यादि सब उसी म्रन्मा का अपभ्रंश है। प० हिन्दुस्तान और बंगाले की खाड़ी पू० कम्बोज और चीन, उ० चीन और द० स्याम और समुद्र और मलाका। बिस्तार १६४००० मील मु०। नदी सब से बड़ी ऐरावती तिब्बत के पू० से निकलकर १८०० मील बहने के बाद कई धारा होकर समुद्र से मिलती है। राजधानी आइन्वा जिसे अंगरेज़ आवा और वहां वाले रत्नपुर भी कहते हैं, २१° ४५ उ० अ० ९६° पू० दे० में ऐरावती के बा० क० बसा है। अमल्दारी इस मुल्क में बौद्धमती राजा की है, और तहसील में वहां का राजा जो कुछ कि मुल्क में पैदा होता है, और जो कुछ कि बाहर से आता है, सब का दसवां हिस्सा लेता है। टैना

सेरिम्, अर्थात् मौलमीन, अराकान, पेगू इत्यादि इलाके अर्थात् समुद्र के तटस्थ बर्म्हा का पू० भाग चटगांव से लेकर मलाका तक, सर्कार अंगरेज़ के कब्ज़े में है उसमें तीन कमिश्नर मुक़र्रर हैं, अराकान का कमिश्नर आवासे २०० मील नै०,आकयाब में रहता है, मौलमीन का आवा से ४०० मील द०अ०को झुकता मौलमीन में, और पेगू का आवा से ३०० मील द० पेगू में। पेगू से ६० मील द० ऐरावती के द० क० रंगून का बंदर है॥

॥ स्याम ॥

जिसे बर्म्हावाले स्यान और शान कहते हैं १०° से १८° उ० अ० और ९९° से १०५° पू० दे० तक चला गया है। उ० और पू० बर्म्हा, द० स्याम की खाड़ी, और पू० कम्बोज। बिस्तार १५५००० मील मु०। राजधानी बंकाक १३° ४०° उ० अ० १०१° १० पू० दे० में मीनम् नदीके दोनों कनारों पर है, राजा बौद्धमती तिजारत भी करता है॥

॥ मलाका ॥

यह प्रायद्वीप, जिसे वहांवाले मलय देश कहते हैं, १° २२' से ६° उ० अ० तक चला गया है। तीन तरफ़ समुद्र से घिरा है चौथी तरफ़ अर्थात् उ० को उसे क्रा नाम डमरूमध्य बर्म्हा के मुल्क से मिलाहै। लंबान ८०० मील चौड़ान १२० मील। इस मुल्कमें छोटे छोटे कई राज हैं। हाकिम वहांका सुन्नी मुसल्मान सुल्तान कहलाता है। राजधानी मलाका २° १४' उ० अ० १०२° १२' पू० दे० में समुद्र के तट पर सर्कार अंगरेज़ बहादुर के क़ब्ज़े में है। मलाका के अ० १२० मील के तफ़ावत पर सिंहपुर और बा० २४० मील के तफ़ावत पर

पुलोपिनांग ये दोनों टापू भी सर्कार अंगरेज़ बहादुर के दख़ल में हैं, इन्हींको हिन्दुस्तानी लोग काला पानी कहते हैं, अंगरेज़ पुलोपिनांग को प्रिन्स आफ़ वेल्स का टापू पुकारते हैं ॥

॥ कोचीन ॥

वहां के बादशाह के क़ब्ज़े में तीन मुल्क हैं, कोचीन टांकिंग अथवा ऐनम्, और कम्बोज जिसे अंगरेज़ कम्बोड़िया कहते हैं। कम्बोज ८° से १५° उ० अ० तक और कोचीन ८० से १८° उ० अ० तक और टांकिंग १८° से २३° उ० अ० तक, १०५° और १०६° पू० देश के बीच चला गया है। उ० चीन, द० और पू० समुद्र प० स्याम बर्म्हा और चीन। बिस्तार १५०००० मील मु०। नदी सब में बड़ी कम्बोज चीन से निकली है, और १४०० मील बहकर समुद्र में गिरती है। ह्यू वहां के बादशाह की दारुस्सल्तनत अर्थात् राजधानी है ॥

॥ चीन ॥

२१° ५५° उ० अ० तक और ७०° से १४२° पू० देशांतर तक। पू० तूरान, प० पासिफ़िक् समुद्र, उ० एसियाईरूस, द० हिमालय पहाड़ बर्म्हा और कोचीन। लंबान ४९००मील चौड़ान २०००मील। बिस्तार ५०००००० मील मु०। आमदनी६००००००००, यद्यपि बस्तुत: इस बिस्तार में चार मुल्क बस्ते हैं, अर्थात् असली चीन तिब्बत तातार, जिसे माचीन और महाचीन भी कहते हैं, और कोरिया का प्रायद्वीप, लेकिन एक बादशाह के आधीन रहने के कारन अब ये सब एकही नाम से, अर्थात् चीन पुकारे जाते हैं। असली चीन उ० में तातार से मिला है और उसके पू० और द० पासिफ़िक् समुद्र की खाड़ियां हैं, नाम उनका पीला नीली और चीन की, और द० कोचीन और बर्म्हा

से और प० बर्म्हा और तिब्बत से घिरा है। तिब्बत हिमालय के उ० और फिर तिब्बत के उ० तातार है, अलताई का पहाड़ उसे उ० में रूस से जुदा करता है, प० तूरान है, और पू० असली चीन और समुद्र। कोरिया का प्रायद्वीप असली चीन के ई० पड़ा है। सिवाय इन मुल्कों के बहुत से टापू भी फ़ार्मोसा और लीयू कीयू इत्यादि वहां के बादशाह के ताबे हैं। तातार में शामू अथवा गोबी का पटपर रेगिस्तान प्रायः १४०० मील लंबा होवेगा। तिब्बत में कैलास पर्बत हिमालय का टुकड़ा ३०००० फ़ुट समुद्र से ऊंचा है। चीन और बर्म्हा के बीच में हिमालय की शाखा समुद्र पर्य्यन्त चली गई, पर ज्यों ज्यों पूर्ब को बढ़ी नीची होती गई। नदियां बहुत हैं हुअंगहो तिब्बत और तातार के बीच रथिको पहाड़ से निकलकर २६०० मील बहने के बाद समुद्र में गिरती है, और यङ्त्सी कायङ तिब्बत से निकलकर २२०० मील बहने के बाद नानकिङ् शहर से कुछ दूर आगे हुअंगहो से मिल जाती है। बादशाही नहर कांटन से पेकिन तक ८०० मील लंबी है। आमुर नदी २०००मील तातार में बहकर सघलियन के टापू के साम्हने समुद्र से मिल गई है। झीलें चीनमें पयंग तातार में नोरज़ैसां और पलकसी, और तिब्बत में कैलास और हिमालय के बीच मानसरोवर और रावणहृद, जिन्हें माणा अथवा मानतलाई और राकसतालभीकहते हैं मशहूर हैं। मानसरोवर १५ मील लंबा और ११ मील चौड़ी है चीन की दारुस्सल्तनत पेकिन जिसे कोई पेचिन भी कहता है ४०^{0} उ० अ० और ११६^{0} पू० दे० में बसा है। तातार में यार्क़न्द पेकिन से २४०० मील प० और काशग़र यार्क़न्द से १५० मील बा० मशहूर शहर हैं। तिब्बत का बड़ा शहर लास पेकिन

से १८०० मील नै० है। पहले ग़ैरमुल्कवालों को केवल कांटन के बंदर में तिजारत करने की इज़ाजत थी लेकिन लड़ाई के बाद १८४२ ई० से अंगरेज़ों को समाय फूचूफू निङपो और शांघे इत्यादि और भी कई बंदरों में तिजारत करने की इज़ाजत होगई। बादशाह वहां का बेद्धमती है॥

॥ जपान ॥

चीन के पू० २६° ३५' और ४६° उ० अ० के दर्मियान जपान के टापू हैं। नीफ़न सिटकाफ़ और क्यूस्यू ये तीन तो बड़े हैं, और बाक़ी छोटे। सब से बड़ा नीफ़न कुछ ऊपर ८०० मील लंबा और ६० से १०० मील तक चौड़ा है। बिस्तार तीनों टापुओं का ६०००० मील मु०। आमदनी २८००००००० रु० साल। राजधानी जेडो ३६° उ० अ० ४०° पू० दे० में है नदी और नहरें शहरके बीचसे बहती हैं। मत वहां वालों का भी बौद्धों है॥

॥ एशियाई रूस ॥

एशियाई इस वास्ते कहते हैं, कि रूस का मुल्क कुछ तो एशिया में पड़ा है और कुछ यूरुप अर्थात् फ़रंगिस्तान में गिना जाता है, इसलिये एशियाई का बयान जो एशिया में पड़ा है एशिया के साथ और यूरुपी, अर्थात् फ़रंगिस्तान के रूस का वर्णन जो यूरुप में गिना जाता है फ़रंगिस्तान के साथ किया जावेगा, बरन इस बादशाहतका ज़ियादः बयान फ़रंगिस्तान ही के साथ होवेगा क्योंकि राजधानी इसकी पिटर्सबर्ग फ़रंगिस्तान में बसी है। जानना चाहिये कि एशियाई रूस, जो सिवाय ककेसस के कोहिस्तानी ज़िलों के ४८° से ७८° उ० अ० तक और ५३' पू० दे० से १७०° प० दे० तक चला गयाहै उ० उत्तर समुद्र से और द० चीन तूरान ईरान और एशियाई रूस से,

पू० पासिफ़िक समुद्र से और प० फ़रंगिस्तानी रूससे घिरा हुआ है। बिस्तार ३००००० मील मु० साइबीरिया इश्तराख़ान और ककेसस के कोहिस्तानी ज़िले ये तीन उसके बड़े हिस्से हैं। साइबीरिया यूरल पहाड़ से पासिफ़िक समुद्र तक चला गया है, उनके ने० डन और वलगा नदी और कास्पियन सी के बीच इश्तराख़ान और उसके ने० कास्पियन सी और ब्लाकसी के बीच ककेसस के कोहिस्तानी ज़िले हैं। पहाड़ों के दर्मियान इस मुल्क में अलताई और यूरल और ककेसस की श्रेणियां प्रसिद्ध हैं। इसी ककेसस को फ़ारसी में कोहक़ाफ़ कहते हैं। उसका अलबुर्ज़ नामी एक शिखर प्राय: १८००० फ़ुट समुद्र से ऊंचा है। अलताई इस मुल्कको तातार से और यूरल उसे फ़रंगिस्तान से जुदा करता है। सब में बड़ी नदी इस मुल्क में ओबी २५५० मील लम्बी है। लेना दोहज़ार मील लम्बी है। दोनों अलताई से निकलकर उत्तर समुद्र में गिरती हैं, और वलगा इस मुल्क को फ़रंगिस्तानी रूस से जुदा करती हुई कास्पियन सी में गिरती है। झील बेकल की ३५० मील लम्बी और ५० मील तक चौड़ी है। साइबीरिया के अ० की तरफ़ कम्सकटका का प्रायद्वीप प्राय: ६०० मील लम्बा है, और उस में कई एक ज्वालामुखी पहाड़ भी हैं। जार्जिया के इलाक़े में कास्पियन सी के पश्चिम कनारे दरख़्त और पानी से ख़ाली एक पटपर में बाकू की महाज्वालामुखी है॥

॥ अफ़ग़ानिस्तान ॥

यह मुल्क हिन्दुस्तान और ईरान के बीच में २५° से ३०° उ० अ० तक और ५८° से ७२° पू० दे० तक चला गया है। द० समुद्र, उ० तूरान, पू० हिंदुस्तान और प० ईरान उसकी सीमा

है । ६00 मील पू० से प०को लंबा और प्राय: ८०० मील उ०से द० को चौड़ा है । बिस्तार ४६४000मील मु० । इस मुल्क के तीन बड़े हिस्से हैं । उ० असली अफ़ग़ानिस्तान द० बलूचिस्तान और प० हिरात, अथवा खुरासान । हिमालय की श्रेणी जो सिन्ध के दहने कनारे इस मुल्क के उ० भाग में पड़ी है उसे वहांवाले हिन्दूकुश कहते हैं । नदियां हेरमंद और फ़रह दोनों जरह की झील में जो सेस्तान के दर्मियान प्राय: १00 मील लम्बी होवेगी गिरती हैं । हेरमंद ६५0 मील से अधिक लम्बी है । आमदनी कुछ न्यूनाधिक ५०00000 रु० साल । इस में ३४00000 तो काबुल कंदहार अर्थात् असली अफ़ग़ानिस्तान की ओर २000000 नक़द और जिन्स मिलाकर हिरात को । बलूचिस्तान कुल ३00000 का मुल्क है । राजधानी काबुल $34^{0}10'$ उ० अ० और 69^{0} १५ʹ पू० दे० में समुद्र से कुछ कम ६५00फ़ुट ऊंचा कामा नदी के दोनों तरफ़ । ग़ज़नी, अथवा ग़ाबुल, काबुल से ७0मील द० । कंदहार (गन्धार) काबुल से प्राय:२00 मील नै० । हिरात काबुल से कुछ कम ५00 मील प० । क़िलआत, बलूचिस्तान के ख़ान के रहने की जगह, काबुल से ४२५ मील नै० द०को झुकता । क़िलआत से अनुमान २५0 मील के लगभग द० नै० को झुकता, और जहां हिंगुल नदी का समुद्र से संगम हुआ है उस से २० मील ऊपर, उसी नदी के कनारे दो पहाड़ों के बीच एक गुफ़ासी है उसी के ऊपर हिंगलाज देवी का छोटा सा कच्चा मन्दिर बना है ॥

॥ तूरान ॥

अथवा तुर्किस्तान, जिसे अंगरेज़ इंडिपेंडेंट टार्टारी अर्थात् स्वाधीन तातार कहते हैं, 35^{0} से 51^{0} उ० अ० तक और 52^{0}

से २४° पू० दे० तक चला गया है। प० कास्पियन सी (बहरे खिज़र) एक बड़ी झील है, २५० मील चौड़ी और ६५० मील लंबी, बड़ी और खारी होने के कारण सी और बहर अर्थात् समुद्र कही जाती है। अलताई के पहाड़ तूरान को उ० रूस से, बिलूरताग के पहाड़ पू० चीनीतातार से और हिन्दूकुश के पहाड़ द० अफ़ग़ानिस्तान से जुदा करते हैं। ये सब पहाड़ एक दूसरे से जुड़े और हिमालय से मिले हुये हैं। द० तरफ़ तूरान की सरहद्द जेहूं पार बराबर कास्पियन तक ईरान से मिली है। बिस्तार १०००००० मील मु०। आमदनी ४८००००० रु० साल। जेहूं और सेहूं प्रख्यात नदियां हैं। जेहूं जिसे अंगरेज़ी में आकसस और संस्कृत में चक्षुस् कहते हैं १३०० मील और सेहूं ६०० मील बहती है। झील आराल की, जिसे बहरे ख़ारज़्म भी कहते हैं, २०० मील लंबी और ७० मील चौड़ी है। जेहूं और सेहूं दोनों बिलूरताग पहाड़ से निकल कर इसी झील में गिरती हैं। बदख़्शां का इलाक़ा अ० में हिन्दूकुश के उ० है। राजधानी बुख़ारा सुग़्द नदी के दोनों कनारों पर बसा है। समर्क़न्द वहां से १५० मील पू० है। यद्यपि यह सारा मुल्क बुख़ारे की सल्तनत में गिना जाता है, लेकिन उसके दर्मियान ख़ीवा अथवा ख़ारज़्म और ख़ोक़न्द अथवा कोकन ई० को और कुंदुज़ अ० को, इन तीनों इलाक़ों में ख़ान अर्थात् हाकिम केवल नाम मात्र को बुख़ारे के आधीन हैं *॥

---

* अब बहुत सा इलाक़ा रूसियों के क़ब्ज़े में चला गया है और रूसियोंने बुख़ाराके बादशाहको बिल्कुल दबा लिया है॥

॥ ईरान ॥

२५^0 से ४०^0 उ० अ० तक और ४४^0 से ६५^0 पू० दे० तक। उ० रूस और तूरान और कास्पियन सी, द० ईरान की खाड़ी (दर्याइ उम्मां) पू० अफ़ग़ानिस्तान, प० एशियाई रूम। बिस्तार ५६0000 मील मु०, आमदनी ३0000000 रु० साल नीचे इस मुल्क के सूबों के साम्हने उनके बड़े शहरों का नाम लिखते हैं॥

नम्बर	नाम सूबों का	नाम शहरों का
१	आज़रबायजान रूम और रूस की हद्द पर	तबरेज़
२	गुर्दिस्तान आज़रबायजान के द०	कर्मांशाह
३	लूरिस्तान गुर्दिस्तान के द० ..	खुर्रमाबाद
४	खुजिस्तानलूरिस्तानकेद०समुद्रतक	दिज़फुल
५	फ़ार्स खुजिस्तानके पू०	शीराज़
६	लारिस्तान फ़ार्सके द० समुद्रतक ..	लार
७	कर्मां फ़ार्स के पू०	कर्मां
८	खुरासान कर्मां के उ०	मशहिद
९	इराक़ फ़ार्स के उ०	इसफ़हान। तिहरान्
१०	माज़ंदरान् इराक़ के उ०	सारी
११	गीलां माज़ंदरान् के बा०	रश्द
१२	अस्त्राबाद गीलां के उ०	अस्तराबाद

हुर्मुज़ और करक इत्यादि कई टापू, जो ईरान की खाड़ी में हैं, इसी बादशाहत में गिने जाते हैं। राजधानी तिहरान् ३६^0 ४०' उ० अ० ५०^0 ५२' पू० दे० में है। इस्फ़हान पुरानी

राजधानी वहां से २५० मील द० ज़िंदरूद के कनारे है। और ५०० मील द० शीराज़ है। शीराज़ से ३० मील बा० अतिप्राचीन राजधानी इस्तख़र है, जिसे अंगरेज़ प्रसिपोलिस कहते हैं, अब तक निशान मौजूद हैं॥

॥ अरब ॥

यह प्रायद्वीप एशिया के नै०में १२° ३०` से ३४० ३०` उ० अ० तक और ३२° ३०` से ६०°पू० दे० तक चला गया है। उ० रूस की सलतनत, पू० ईरान की खाड़ी प० रेडसी और स्वीज़ का डमरुमध्य द० अरब का समुद्र। बिस्तार १००००० मील मु०। हिजाज़ का इलाक़ा तो जिस में मक्का और मदीना है रूम के बादशाह के ताबे है और बाक़ी सारा मुल्क जुदा जुदा हाकिमों के तहत में बटा हुआ है,। वे हाकिम शेख़ शरीफ़ ख़लीफ़ा अमीर और इमाम कहाते हैं,। यह मुल्क बिल्कुल रेगिस्तान है, समुद्र के कनारे कुछ कोहिस्तान भी है, पर पहाड़ ऊंचे नहीं। रेड़सी के उ० कनारे से पास ही तूरका पहाड़ है। बहरैन का टापू ईरान की खाड़ी में इसी मुल्क के साथ गिना जाता है। अरब के द० कनारे से २४० मील अफ़रीका के पू० तट से निकट सक़तरा का टापू है। मक्का२१° २८` उ० अ० और ४०° १५` पू० दे० में बसा है मुसल्मानों का बड़ा तीर्थ है वहां से २०० मील उ० बा० को झुकता मदीना है। अदन का क़िला जो रेडसी के मुहाने पर यमन के इलाक़े में है कुछ दिनों से सर्कार अंगरेजी के क़ब्ज़े में आगया है॥

॥ एशियाई रूम ॥

इसको एशियाई इसवास्ते कहते हैं कि रूम की सल्तनत एशिया और फ़रंगिस्तान दोनों खण्डों में पड़ी है यहां उसी भाग का

बर्णन होता है जो एशिया में है। राजधानी इस सल्तनत की कुस्तुंतुनिया फ़रंगिस्तान में है। फ़रंगिस्तान वाले इस मुल्क को एशियाटिक टर्की अर्थात् एशियाईतुर्किस्तान पुकारतेहैं परन्तु इस में शाम की सारी विलायत और अरब और ईरान केभी हिस्सेहैं॥

निदान यह एशियाईरूम ३०°से ४२` उ० अ०तक २६°से ४८` पू० दे० तक चला गया है पू० ईरान द० अरब प०मेडिटरेनियन और उ०डार्डनलस मार्मुरा बास्फोरस और ब्लाकसी नाम समुद्र की ख़ाड़ियां हैं बिस्तार ४६०००० मील मु० । शाम का मुल्क फ़ुरात नदी और मेडिटरेनियन के बीच में पड़ा है, उसी के द० भाग में फ़िलिस्तीन है जिसे ईसाई लोग पवित्र भूमि कहते हैं। फ़ुरात के पू० दियारबक्र है, उसका द० भाग अरबी इराक़ और पू० भाग गुर्दिस्तान अथवा कुर्दिस्तान कहलाता है, और उसके उ० तरफ़ रूम का इलाक़ा है जिसे अंगरेज़ आर्मिनिया कहते हैं। पहाड़ों में टारस और अरारात (जूदी) मशहूर हैं टारस की श्रेणी मेडिटरेनियन के तट से निकटहीं निकट ख़लदूनिया अंतरीप से फ़ुरात नदी तक चली गई है, और अरारात रूम में रूस और ईरान की सहद्द पर १०००० फ़ुट समुद्रसे ऊंचा है। नदियों में दजला और फ़ुरात, जो बसरे से कुछ दूर ऊपर मिलकर शातुल् अरब के नाम से ईरान की खाड़ी में गिरतीहैं नामी हैं। फ़ुरात १५०० मील लंबी है और दजला ८००मील। झील डेडसी, जिसे बहरेलूत भी कहते हैं, फ़िलिस्तीन के द० भाग में प्रायः ५० मील लंबी है रोड्स और सिप्रस के टापू मेडिटरेनियन में इसी बादशाहत के ताबेहैं। बग़दाद ३३° २०` उ० अ० ४४° २४` पू० देशमें दजला नदीके दोनों कनारों पर मशहूर शहर है उससे ४०५ मील प० बा० को झुकता

हलब है। ४०५ मील प० पारफ़ार नदी के दोनों कनारों पर दमिश्क है। ४२५ मील बा० उ० को झुकता इमं के इलाके में अर्ज़रुम है। और प० सीमा पर समुद्र के कनारे समिर्ना बसा है। बसरा बग़दाद से २८० मील अ० शातुल् अरब के द० कनारे है। मूसिल २६० मील बा० दजला के द० क० बसा है। इसी के साम्हने जहां अब नूनिया गांव बस्ता है पुराने शहर नैनवा का निशान देते हैं। बैतूल मुक़द्दस जिसे अंगरेज़ जरू-ज़लम अथवा उर्शलीम कहते हैं फ़िलिस्तीन अर्थात् किनआं के इलाके में डेडसी झील और मेडिटरेनियन के बीच में है। बग़दाद से ५० मील द० फ़ुरात के दोनों कनारों पर हिल्ला गांव के पास बाबिल के पुराने शहर का निशान देते हैं। कर्बला बग़दाद से ५० मील नै० फ़ुरात पार है। डार्डेनलस के तटस्थ ३०४७ बरस गुज़रे ट्राय का वह प्रसिद्ध क़िला था जिसे यूनानियों ने १२ बरस की लड़ाई में तोड़ा था॥

इति॥

नक़शे में जल्द पता लगने के वास्ते हिन्दुस्तान के बड़े अथवा नामी शहर और स्थानों का अक्षांश और देशान्तर ॥

नाम स्थानों का	उत्तर अक्षांश		पूर्व देशान्तर	
	अंश	कला	अंश	कला
अजन्ता ..	२०	३४	७५	५३
अजमेर ..	२६	३१	७४	२८
अजयगढ़ ..	२४	५०	८०	३
अटक ..	३३	५६	७१	५७
अमरकण्टक ..	२२	५५	८२	७
अमरोहा ..	२९	०	७८	४२
अमृतसर ..	३१	३३	७४	४८
अम्बाला ..	३०	१९	७६	४४
अयोध्या (फ़ैज़ाबाद) ..	२६	४८	८२	४
अरगांव ..	२१	७	७७	३
अलमोरा ..	२९	३५	७९	४४
अलवर ..	२७	४४	७६	३२
अलीगढ़ (कोयल) ..	२७	५६	७७	५९
असीरगढ़ ..	२१	२८	७६	२३
असाई ..	२०	१६	७५	५२
अहमद नगर ..	१९	५	७४	५५
अहमदाबाद ..	२३	१	७२	४२
आगरा (अकबराबाद) ..	२७	११	७७	५३
आज़मगढ़ ..	२४	६	८३	१०

नाम स्थानों का		उ० अक्षांश		पू० देशान्तर	
		अंश	कला	अंश	कला
आरा	..	२५	३५	८३	५०
अर्कांड्डु (अर्काट)	..	१२	५२	७६	२२
औरंगाबाद	..	१६	५४	७५	३३
इटावा	..	२६	४०	७८	५३
इन्दौर	..	२२	४२	७५	५०
इलचपुर	..	२१	१४	७७	३६
इलाहाबाद (प्रयाग)	..	२५	२०	८१	५०
इलोरा (इलूह्ह)	..	१६	५८	७५	२३
इल्लौर	..	१६	४३	८१	५१
उज्जैन (आवन्ती)	..	२३	११	७५	३५
उदयपुर	..	२४	३५	७३	४४
उरछा	..	२५	२६	७८	३८
ऊच	..	२६	११	७०	५०
कटक	..	२०	२८	८६	५
कड़प (कृपा)	..	१४	३२	७८	५४
कडालूर	..	११	४४	७६	५०
क़न्नौज	..	२७	४	७६	४०
कपूरथला	..	३१	२४	७५	२१
करदला	..	१८	३७	७५	४१
करनाल	..	१५	४४	७८	२
करांचीबन्दर	..	२४	५१	६७	१६

नाम स्थानों का		उ० अक्षांश		पू० देशान्तर	
		अंश	कला	अंश	कला
करोली	..	२६	३२	७६	५३
कलकत्ता	..	२२	२३	८८	२८
कल्लीकोट	..	१९	२३	८५	११
कांगड़ा (नगरकोट)	..	३२	१५	७६	८
काठमाण्डु	..	२७	४२	८५	०
कान्हपुर	..	२६	३०	८०	१३
कारीकाल	..	१०	५५	७९	४४
कामाख्या	..	२६	३६	९२	५६
कालपी	..	२६	१०	७९	४१
कालाबाग़ (काराबाग़)	..	३३	४	७१	१७
कालिंजर	..	२५	६	८०	२५
किशनगढ़	..	२४	२८	७९	४४
किशननगर	..	२३	२६	८८	३५
कुंजवरम् (कांचीपुर)	..	१२	४९	७९	४१
कुमारी अन्तरीप	..	८	४	७७	४५
केदारनाथ	..	३०	५३	७९	१८
कोच्ची (कोच्चीन) (कच्छा)	..	९	५१	७६	१७
कोटा	..	२५	५२	७५	४५
कोमेला	..	२३	२८	१०	४३
कोम्बकोनम्(कुंभाकोलम्)	..	१०	५९	७९	२०
कोयम्मतूर	..	१०	५२	७७	५

नाम स्थानों का		उ० अक्षांश		पू० देशान्तर	
		अंश	कला	अंश	कला
कोलापुर	..	१६	१९	७४	२५
कोहाट	..	३३	४४	७१	१५
खंभात	..	२२	२१	७२	४८
खानगढ़	..	२९	४०	७०	५०
खेड़ा	..	२२	४७	७२	४८
गढ़ीचो	..	३१	०	७९	०
गंजाम	..	१९	२१	८५	१०
गंतूर (मुर्तज़ानगर)	..	१६	१७	८०	३२
गया	..	२४	४९	८५	०
गाज़ीपुर	..	२५	३५	८३	३३
गुज़रात (पंजाब में)	..	३२	३३	७३	५७
गुड़गावां	..	२७	५०	७९	५०
गुरदासपुर	..	३१	५०	७५	४८
गुजरांवाला	..	३१	५०	७४	३
गोकाक	..	१६	११	७४	५८
गोरखपुर	..	२६	४६	८३	१९
गोलकुंडा	..	१७	१५	७८	३२
गोवा	..	१५	३०	७४	२
गोहाट	..	२५	५५	९१	४०
गोड	..	२४	५८	८७	५९
ग्वालपाड़ा	..	२६	८	९०	३८

नाम स्थानों का	उ० अक्षांश		पू० देशान्तर	
	अंश	कला	अंश	कला
ग्वालियर ..	२६	१५	७८	१
घोंघा ..	२१	४०	७२	२३
चटगांव(इसलामाबाद) ..	२२	२२	६१	४२
चन्दर नगर ..	२२	४६	८८	२६
चंदेरी ..	२४	३२	७८	१०
चम्बा ..	३२	१७	७६	५
चम्पानेर (पवनगढ़) ..	२२	३१	७३	४१
चरनारगढ़ (चनार) ..	२५	६	८२	५४
चांदा ..	२०	४	७६	२२
चारखाड़ी ..	२५	२६	७६	४३
चिककूल ..	१८	१५	८४	०
चिकावालापुर ..	१३	२६	७७	४७
चितलदुर्ग (सीतलदुर्ग) ..	१४	४	७६	३०
चितूर ..	१३	१५	७६	१०
चित्तौड़गढ़ ..	२४	५२	७४	४५
चित्रकोट ..	२५	१०	८०	४५
चूका ..	३०	१६	८६	३४
चेरापूंजी ..	२५	४३	६१	४०
चेङ्गलपट्टू (सिंहलपेटा) ..	१२	४६	८०	१०
छतरपुर ..	३४	५६	७६	३५
छपरा ..	२५	४६	८४	४६

नाम स्थानों का	उ० अक्षांश		पू० देशान्तर	
	अंश	कला	अंश	कला
छिछरोली ..	३०	१५	७७	२१
छोटानागपुर ..	२३	३०	८५	३०
जगन्नाथ (पुरी) ..	१९	४९	८५	५४
जब्बलपुर ..	२३	११	८०	१६
जमनोत्री ..	३०	५२	७८	४०
जम्बू ..	३२	५६	७४	३८
जयन्तापुर ..	२५	१७	७९	३२
जयपुर (आमेर) ..	२६	५५	७५	३०
जहाज़पुर ..	२०	५२	८६	२४
जालंधर ..	३१	१८	७५	४०
जालोन ..	२६	१०	७९	१३
जींद ..	३०	१०	७६	५
जूनागढ़ ..	२१	२९	७०	३८
जैसलमेर ..	२६	४३	७३	५४
जोधपुर ..	२६	१८	७०	०
जौनपुर ..	२५	४५	८३	०
झज्झर ..	२८	४१	७६	४४
झंग ..	३१	६	७८	२५
झालरापाटन ..	२४	३२	७६	१६
झांसी ..	२५	३२	७८	३४
झिंझी ..	२२	१६	७९	३८

नाम स्थानों का		उ० अक्षांश		पू० देशान्तर	
		अंश	कला	अंश	कला
टीहरी (गढ़वाल)	..	३०	२३	७८	२८
टीहरी (बुंदेलखंड)	..	२४	४५	७८	५२
टोंक	..	२६	१२	७५	५८
ठट्ठा	..	२४	४४	६८	१०
ठाणा	..	१९	११	६३	६
डीग	..	२७	३०	६७	१२
डूंगरपुर	..	२३	५४	७३	५०
ढाका (जहांगीर नगर)	..	२३	४२	९०	१३
तंजाउरू (तंजौर)	..	१०	४२	७९	११
तसीसूदन	..	२७	५	९६	४०
तालचेरी	..	११	४५	७५	३३
तिरकमबाड़ी	..	१०	६७	७६	५४
तिरुचिनापल्ली	..	१०	४२	७८	५४
तिरुनमाली	..	११	१२	७९	०
तिरुनेल्लुवली	..	८	४८	७८	१
तूतीकोरिन्	..	८	५७	७६	३६
तेल्लिचेरी	..	११	४५	७५	३३
त्रिबिकेरा	..	१२	३	७९	४३
त्रिविंद्रम	..	८	६	७९	३७
त्रिम्बक	..	२०	१	७३	४२
त्रिवांकाडु	..	८	२५	७७	३३

नाम स्थानों का		उ० अक्षांश		पू० देशान्तर	
		अंश	कला	अंश	कला
थानेसर (कुरुक्षेत्र)	..	२९	५५	७६	४८
दतिया	..	२५	४३	७८	२५
दानापुर	..	२५	३७	८५	५
दार्जलिंग	..	२६	५६	८८	१३
दिनाजपुर	..	२५	३७	८८	४३
दिल्ली (शाहजहांबाद)	..	२८	४१	७७	५
देराइस्माईलख़ां	..	३१	५०	७०	३३
देराग़ाज़ीख़ां	..	२९	५०	७०	२०
देवगढ़ (बैद्यनाथ)	..	२४	३२	८६	४०
देवला	..	२४	३	८४	४४
देवास	..	२२	५९	७६	१०
देसा	..	२४	९	७२	८
देहरा	..	३०	१८	७८	१
दौलताबाद (देवगढ़)	..	१९	५७	७५	२५
द्वारका	..	२२	१५	६०	०
धारवार	..	२२	१७	७८	४२
धार (धारानगर)	..	२२	३५	७५	२४
धूलिया	..	२१	१	७४	४७
धोलपुर	..	२६	४२	७७	४४
नदिया	..	२३	२५	८८	२४
नरवर	..	२५	४०	७७	५१

नाम स्थानों का		उ० अक्षांश		पू० देशान्तर	
		अंश	कला	अंश	कला
नरसिंहपुर	..	२२	४०	७८	५२
नरायनगंज	..	२३	३७	९०	३५
नवाबगंज	..	२७	६	८१	२६
नसीराबाद	..	२६	२३	७९	३६
नागपुर	..	२१	९	७९	११
नागोर (बंगाले में)	..	३३	५३	८७	२०
नागोर (दक्खिन में)	..	१०	४५	७९	५४
नांदेड	..	१९	३	७७	३८
नाभा	..	३०	२६	७६	१२
नासिक	..	१९	५६	७३	५६
नाहन	..	३०	३३	७७	१६
नीमच	..	२४	२०	७५	०
नीमबहेड़ा	..	२४	३८	७४	५०
नूरपुर	..	३१	५८	७५	२२
नेल्लूरु	..	१२	४९	८०	१
पटना (अज़ीमाबाद)	..	२५	३७	८५	१५
पटियाला	..	३०	१६	७६	२२
पटुच्चेरी (पाण्डुचेरी)	..	११	५७	७९	५४
पण्डरपुर	..	१७	४२	७५	२६
पन्ना	..	२४	४५	८०	१३
पबना	..	२४	०	८९	१२

नाम स्थानों का	उ० अक्षांश		पू० देशान्तर	
	अंश	कला	अंश	कला
परतापगढ़ ..	२४	२	७४	५१
पलासी ..	२३	४५	८८	१५
पाकपट्टन ..	३०	२१	७३	१६
पानीपत ..	२९	२२	७६	५१
पासपुर ..	३४	२०	७४	५५
पार्कर ..	२४	१५	७०	४०
पिंजौर ..	३०	४०	७६	५४
पिण्डदादनख़ां ..	३२	३९	७२	४०
पिशोर ..	३४	६	७१	१३
पीलीभीत ..	२८	४२	७९	४२
पुरनियां ..	२५	२८	८८	१४
पुरुलिया ..	२३	२०	८६	५५
पूना ..	१८	३०	७४	२
फ़तहगढ़ (फ़र्रुख़ाबाद) ..	२७	२४	७९	२७
फ़तहपुर ..	२५	५६	८०	४५
फ़तहपुर गूगेरा ..	३०	५५	७३	५
फ़तहपुर सीकरी ..	२६	६	७७	३४
फ़रीदकोट ..	३०	२	७४	३३
फ़रीदपुर ..	२३	३२	८९	४३
फ़िरोज़पुर ..	३०	५५	७४	३५
बक्सर ..	२५	३५	८३	५०

नाम स्थानों का		उ० अक्षांश		पू० देशान्तर	
		अंश	कला	अंश	कला
बक्कूर	..	३१	३८	७०	४०
बगुडा	..	२४	५५	८९	२२
बंगलूर	..	१२	५७	७७	३८
बटाला	..	३१	४८	७५	६
बटिंडा	..	३०	१२	७४	४८
बड़ौदा	..	२२	२१	७३	२३
बदरीनाथ	..	३०	४३	७९	३९
बदाऊं	..	२८	४	७८	५८
बनारस (काशी)	..	२५	३०	८३	१
बम्बई	..	१८	५६	७२	५७
बयाना	..	२६	५७	७७	८
बरेली	..	२८	२३	७९	१६
बर्दवान	..	२३	१५	८७	५७
बलन्दशहर	..	२८	२५	७७	४३
बलहरी (बल्लारी)	..	१५	५	७६	५९
बलुआ	..	२२	४०	९०	४०
बलेश्वर	..	२१	३२	८६	५६
बस्तर	..	१९	३१	८२	२८
बहराइच	..	२७	३३	८१	३०
बहावलपुर	..	२९	१९	७१	२९
बाक़रगंज	..	२२	४२	८९	२०

नाम स्थानों का	उ० अक्षांश		पू० देशान्तर	
	अंश	कला	अंश	कला
बांकुड़ा ..	२३	५	८७	१३
बाग ..	२२	२६	७४	४५
बाड़ी (सावन्तबाड़ी) ..	१५	५६	७४	०
बाढ़ ..	२५	२८	८५	४६
बांदा ..	२५	३०	८०	२०
बांसबाड़ा ..	२३	३१	७४	३२
बारहभट्टी ..	२०	२७	४६	६
बारासत ..	२२	२३	८८	५६
बालासोर ..	२१	३२	८६	५६
बिजनौर ..	२९	२५	७८	१२
बिजयनगर ..	१५	१४	७६	३७
बिजावर ..	२४	३७	७९	३२
बिठूर ..	२६	४०	८०	८
बिदर ..	१७	४९	७७	४६
बिलासपुर ..	३१	१९	७६	४५
बिल्लूर(राय इल्लोर) ..	१२	५७	७९	११
बिहार ..	२५	१३	८५	३५
बीकानेर ..	२७	५७	७३	२
बीजापुर (बिजयपुर)..	१६	४६	७५	४७
बुरहानपुर ..	२१	१९	७६	१८
बूढ़िया ..	३०	९	७७	२

नाम स्थानों का		उ० अक्षांश		पू० देशान्तर	
		अंश	कला	अंश	कला
बून्दी	..	२५	२८	७५	३०
वृन्दाबन	..	२३	१५	८७	५७
बेलगांव	..	१५	५२	७४	४२
बेतूल	..	२१	५५	७८	४
बैरागढ़	..	२०	१८	८२	५५
बेरीसाल	..	२२	४६	९०	१७
बालिया	..	२४	२३	८८	४४
भक्कर	..	३१	३८	७०	४०
भड़ोच	..	२१	४६	७३	१४
भरतपुर	..	२७	१७	७७	२३
भागलपुर	..	२५	१३	८६	५८
भातगांव	..	२७	४०	८५	८
भिलसा	..	२३	३३	७७	५५
भुज	..	२३	१५	६९	५२
भूपाल	..	२३	१७	७७	३०
मऊ (छावनी)	..	२२	३३	७५	५०
मंगलूर(कोड़ियालबन्दर)	..	१२	५३	७४	५७
मछलीबन्दर(मोसलीपट्टन)	..	१६	१	८१	१४
मण्डलेश्वर	..	२२	१०	४५	३०
मण्डवी	..	२२	५०	६९	३३
मण्डी	..	३१	४०	७६	५३

नाम स्थानों का		उ० अक्षांश		पू० देशान्तर	
		अंश	कला	अंश	कला
मथुरा	..	२७	३१	७७	२३
मदुरा (मीनाक्षी)	..	९	५५	७८	१४
मनीपुर	..	२४	२०	९४	३०
मनेर (मोनिया)	..	२५	३६	८४	५२
मन्दराज (चीनापट्टन)	..	१३	५	८०	२१
मनसूरी	..	३०	३३	७७	५८
ममदोत	..	३०	४०	७४	२०
मरकांडा	..	१२	२६	७५	५०
मलोन	..	३१	१३	७६	४८
महाबलिपुर	..	१२	३६	८०	१६
महाबलेश्वर	..	१८	०	७३	३७
महीदपुर	..	२३	२६	७५	४६
मांझी	..	२५	४६	८४	३५
मांडु	..	२२	२३	७५	२०
मानिकयाल	..	३३	२८	७३	२५
मालदह	..	३४	५८	८७	५६
मालेरकोटला	..	३२	३०	७५	५५
मिट्ठनकोट	..	२८	५१	७०	१०
मियानी	..	२४	४४	५८	२१
मिरज़ापुर	..	२५	१०	८३	३५
मुक्तिनाथ	..	२९	९	८३	१८

नाम स्थानों का		उ० अक्षांश		पू० देशा[illegible]	
		अंश	कला	अंश	कला
मुगेर	..	२५	२३	८६	२६
मुज़फ़्फ़र नगर	..	२९	२७	७७	४०
मुज़फ़्फ़रपुर	..	२६	२	८५	३८
मुरली (जसर)	..	२३	७	८९	१५
मुरादाबाद	..	२८	५१	७८	४२
मुर्शिदाबाद(मक़सूदाबाद)	..	२४	११	८८	१५
मुलतान	..	३०	९	७१	७
मुल्लापुर	..	२७	४१	८१	११
मुहम्मदी	..	२७	५८	८०	५
मेदनीपुर	..	२२	२५	८७	२५
मेरठ	..	२८	५८	७७	३८
मैनपुरी	..	२७	१४	७८	५४
मैसूर (महेशुर)	..	१२	१९	७६	४२
मोडवाडा	..	२३	४८	७१	१५
रंगपुर	..	२५	४३	८९	२२
रणथम्भौर	..	२६	०	७६	१८
रत्नगिरि	..	१७	२	७३	२५
राजगृह	..	२४	५८	८५	३५
राजमहल	..	२५	२	८७	४३
राजमहेंद्री	..	१६	५९	८१	५३
रामपुर (बिसहर)	..	३१	२७	७७	३८

नाम स्थानों का		उ० अक्षांश		पू० देशान्तर	
		अंश	कला	अंश	कला
रामपुर (रुहेलों का)	..	२८	४६	७८	५
रामेश्वर (सेतबन्ध)	..	६	१८	७६	२२
रायकोट	..	३०	३४	७७	४
रायबरेली	..	२६	१४	८१	६
रावलपिण्डी	..	३३	३६	७३	४५
रासमुअर्री(मुंजअन्तरीप)	..	२४	५१	६६	५६
रुरको	..	२६	५६	७७	५८
रुहतासगढ़ (बिहारमें)	..	२४	३८	८३	५०
रुहतास (पंजाब में)	..	३३	०	७३	२०
रेवा	..	२४	३४	८१	१६
रोड़ी	..	३१	३८	७७	४०
रोहतक	..	२८	४०	७६	२०
लखनऊ	..	२६	५१	८०	५०
लन्धोर	..	३०	३३	७७	५८
लसवारी	..	२७	३०	७६	४८
लाहौर	..	३१	३६	७४	३
लुधियाना	..	३०	५५	७५	४८
लुहारडग्गा	..	२३	५	८५	०
लैया	..	३०	५८	७०	३०
लोहगढ़	..	१८	४१	७३	३०
लोहूघाट की छावनी	..	२६	२५	८०	३

नाम स्थानों का	उ० अक्षांश		पू० देशान्तर	
	अंश	कला	अंश	कला
वज़ीराबाद ..	३२	२३	७३	५०
वालाजाहनगर ..	११	४०	७८	५
विजिगापट्टन (बिशाखपट्टन)	१७	४२	८३	२४
शाहजहांपुर ..	२७	५२	७९	४८
शाहनूर ..	१४	५९	७५	२३
शाहपुर (पंजाबमें) ..	३२	६	७८	२५
शाहाबाद ..	२७	४०	७९	५०
शिक्कम ..	२७	१६	८८	३
शिकारपुर ..	२७	३६	६९	१८
शिमला ..	३१	१३	७७	१८
शेलम ..	११	३०	७८	१३
शोलापुर ..	१७	४०	७६	३
श्रीनगर (कश्मीर) ..	३३	२३	७४	४०
श्रीरंगपट्टन ..	१२	२५	७६	४५
सक्कर ..	३१	३८	७०	४०
सबाटू ..	३०	५८	७६	५९
समथर ..	२५	५०	७८	५०
सम्भल ..	२८	३०	७८	२९
सम्भलपुर ..	२१	८	८३	३०
सरधना ..	२९	१२	७७	३१
सरहिन्द ..	३०	४०	७६	२२

नाम स्थानों का	उ० अक्षांश		पू० देशान्तर	
	अंश	कला	अंश	कला
सहसराम ..	२४	५८	८३	५८
सहारनपुर ..	२९	५७	७७	३२
सागर ..	२३	५८	७८	४७
सिवडी ..	२३	५४	८७	३२
सिवनी ..	२२	३	७९	३५
सितारा ..	१७	४२	७४	१२
सिरगूजा ..	२३	५	८३	३०
सिरोही ..	२४	५२	७३	१५
सिरोंज (शेरगंज) ..	२४	५	७७	४१
सिलचार ..	२४	५८	९२	५०
सिलहट ..	२४	५५	९१	४०
सिहोर ..	२३	१५	७७	१०
सीताकुण्ड(चटगांव में) ..	२२	३७	९१	३६
सुकेत ..	३१	२०	७६	५८
सुगौली ..	२६	४६	८५	0
सुदामापुर (पुरबन्दर) ..	२१	३९	६९	४५
सुबर्णदुर्ग ..	१२	५३	७७	२०
सूरत ..	२१	११	७३	७
सोमनाथ(पट्टनसोमनाथ) ..	२०	५३	७०	३५
सोवारा (नसीराबाद) ..	२४	२६	९०	0
स्यालकोट ..	३२	३५	७४	२०

नाम स्थानों का		उ० अक्षांश		पू० देशान्तर	
		अंश	कला	अंश	कला
हज़ारा	..	३४	१	७३	३५
हज़ारीबाग़	..	२३	४५	८५	३०
हमीरपुर	..	२६	०	८०	०
हरिद्वार	..	२९	५३	७८	१०
हस्तिनापुर	..	२९	९	७७	५५
हाजीपुर	..	२५	४१	८५	२१
हिसार	..	२८	५७	७५	२४
हुगली	..	२२	५४	८८	२८
हुशयारपुर	..	३१	३५	७५	५२
हैदराबाद (सिन्ध में)	..	२५	२२	६८	४१
हैदराबाद (दक्खिनमें)	..	१७	१५	७८	३५
होशंगाबाद	..	२२	४०	७७	५१

स्थान लखनऊ मुंशीनवलकिशोर के छापेखाने में छपी
एप्रिल सन् १८८८ ई० ॥